Courier Correo Courrier

October 2018
Volume 33, Number 2

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

Congreso Mundial Menonita
Una Comunidad de Iglesias Anabautistas

Conférence Mennonite Mondiale
Une Communauté d'Eglises Anabaptistes

3

प्रेरणा और मनन

बड़ी आँधी की सी सनसनाहट

8

दृष्टिकोण

जीवनों को परिवर्तित करते हुए पवित्र आत्मा के कार्य की गवाहियाँ

13

देश

युगांडा

16

संसाधन

एमडब्ल्यूसी की पुस्तकें

विश्व सम्मेलन की तिथियाँ

इण्डोनेशिया 2021

रिन्यूवल 2027

एक मददगार स्थान

विश्व सहभागिता रविवार

फेथ एण्ड लाइफ कमीशन के सदस्यों का परिचय

मुखपृष्ठ पर तस्वीर

केन्या के किसुमु में, न्यमासरिया प्राइमरी स्कूल में रिन्यूवल 2017 – पवित्र आत्मा हमें परिवर्तित कर रहा है – आयोजन के अवसर पर संसार भर से आए अतिथिस एक साथ मिलकर आराधना कर रहे हैं और अपनी गवाहियों व बोझ को एक दूसरे के साथ बाँट रहे हैं।

फोटो: लेन रेम्पेल

Courier Correo Courrier

Volume 33, Number 2

Courier/Correo/Courrier is a publication of Mennonite World Conference. It is published twice a year, containing inspirational essays, study and teaching documents and featurelength articles. Each edition is published in English, Spanish and French.

César García Publisher
Kristina Toews Chief Communications Officer
Karla Braun Editor
Melody Morrissette Designer
Sylvie Gudin Koehn French Translator
Diana Cruz Spanish Translator
Beatriz Foth Spanish Translator

Courier/Correo/Courrier is available on request. Send all correspondence to:
MWC, Calle 28A No. 16-41 Piso 2, Bogotá, Colombia.

Email: info@mwc-cmm.org
Website: www.mwc-cmm.org
Facebook: www.facebook.com/MennoniteWorldConference
Twitter: @mwcmm
Instagram: @mwcmm

Courier/Correo/Courrier (ISSN 1041-4436) is published twice a year. See https://www.mwc-cmm.org/article/courier for publication schedule history.

Mennonite World Conference, Calle 28A No. 16-41
Piso 2, Bogotá, Colombia. T: (57) 1 287 5738.
Publication Office: Courier, 50 Kent Avenue, Suite 206, Kitchener, Ontario N2G 3R1 Canada. T: (519) 571-0060.

Publications mail agreement number: 43113014
Printed in Canada at Derksen Printers using vegetablebased inks on paper from a responsible sustainable forest program.

सम्पादकीय

एक आत्मिक ढाँचा

बाइबल के लोग, यीशु के अनुयायी। कभी कभी ऐनाबैपटिस्ट लोगों को ये नाम दिए जाते हैं। परन्तु क्या कभी यह नाम दिया गया – पवित्र आत्मा से प्रेरित हुए लोग? कभी कभी, ऐनाबैपटिस्ट लोगों ने भी ऐसा माना कि यह नाम दूसरी कलीसियाओं के लिए है।

पवित्र आत्मा के कार्य ने कलीसिया के आरम्भिक दिनों से ही कलीसिया में प्राण डाला है। एलिज़ाबेथ कुंजाम ने अपने विशेष लेख में इस बात को सामने लाया है (पृष्ठ 3 से 5)। इसी प्रकार से, एल्फ्रेड न्यूफेल्ड ने लिखा है (पृष्ठ 6 और 7 में) कि ऐनाबैपटिस्ट सुधारकों ने भी पवित्र आत्मा को उनके द्वारा अनुभव किए गए नवजागृति आंदोलन के अनिवार्य अंग, और शिष्यता व शान्ति की गवाही के लिए बुलाहट का अनुसरण करने के लिए सामर्थ के रूप में देखा।

2018 में केन्या में आयोजित रिन्यूवल 2027 का मूलविषय था, ''पवित्र आत्मा हमें परिवर्तित कर रहा है।'' (रिन्यूवल 2027 उन आयोजनों की एक श्रृंखला है जो मेनोनाइट वर्ल्ड कॉंफ्रेंस के द्वारा ऐनाबैपटिस्टवाद की 500वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में मनाये जा रहे हैं।) डेविड शेंक इस बात को सामने ला रहे हैं कि किस प्रकार से पूर्वी अफ्रीका में आई जागृति की प्रक्रिया में पवित्र आत्मा के उल्लेखनीय कार्य के माध्यम से वहाँ की कलीसिया बढ़ी (पृष्ठ 14 और 15)।

इस अंक में *दृष्टिकोण* स्तम्भ के लेखों को मुख्य रूप से इस आयोजन में दी गई गवाहियों से ही लिया गया है। एमडब्ल्यूसी के साझा विश्वास को ध्यान में रखते हुए, इन ऐनाबैपटिस्ट मेनोनाइट लोगों ने यह बताया है कि उन्होंने किस तरह से व्यक्तिगत जीवन में या एक समुदाय के रूप में पवित्र आत्मा के परिवर्तन करने वाली सामर्थ का अनुभव किया है।

साझा विश्वास में यह घोषणा की गई है, ''हम यीशु मसीह के नाम से पवित्र आत्मा की सामर्थ से चलने का प्रयास करते हैं, और पूरे भरोसे के साथ मसीह के आगमन और परमेश्वर के राज्य की अन्तिम पूर्णता की बाट जोहते हैं।''

वर्तमान में, त्रिएक परमेश्वर के तीसरे व्यक्तित्व के बारे में बात करने में कुछ ऐनाबैपटिस्ट लोग शायद संकोच करते हों।

तौभी, साझा विश्वास में हम एक साथ मिलकर इस बात से सहमत हैं कि पवित्र आत्मा हमारे बीच इन रूपों में सक्रिय है: हम जिन तरीकों से परमेश्वर का अनुभव करते हैं वह उनमें से एक तरीका या माध्यम है (1), वही वह माध्यम है जिसके द्वारा हम पाप से फिरने और यीशु के पीछे चलने के लिए परमेश्वर की बुलाहट को सुनते हैं (3), समुदाय के रूप में साथ मिलकर पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने में वह हमारे मार्गदर्शक है (4), और वही वह बल है जो हमें शान्ति स्थापक बनने के लिए सामर्थ प्रदान करता है।

रॉफेल जराखो ने ग्लोबल ऐनाबैपटिस्ट मेनोनाइट शेल्फ ऑफ लिटरेचर के द्वारा चुनी गई जॉन ड्राइवर की पुस्तक *लाइफ इन द स्पिरिट* में लिखा है, ''हमें यह स्मरण रखना आवश्यक है कि पवित्र आत्मा उद्धारकर्ता के आगमन तक के लिए कलीसिया को दे दिया गया स्थायी दान है।'' यह दान सिर्फ एक ही जाति या इतिहास के किसी एक ही समय के लोगों मात्र के लिए नहीं था।

ड्राइवर ने लिखा है, ''वह आत्मिकता जो ऐनाबैपटिस्ट आंदोलन की विशेषता थी जी उठे मसीह के आत्मा के सामर्थी हस्तक्षेप पर निर्भर करती थी। ऐनाबैपटिस्ट लोग अन्य मसीहियों से इसलिए भिन्न थे क्योंकि कलीसिया के विषय में उनकी समझ और उनके कार्य नि:सन्देह दूसरों से भिन्न थे – मसीही समुदाय का हिस्सा बनना ऐनाबैपटिस्ट लोगों के लिए पूरी तरह से अनिवार्य था।''

यीशु को अपने विश्वास, और कलीसिया समुदाय को अपने जीवन का केन्द्र बना कर उसके चारों ओर एक हो कर रहने के द्वारा हम पवित्र आत्मा को शान्ति स्थापित करने के अपने कार्य के लिए एकता का निर्माण करने वाले और हमारी प्रेरणा के रूप में ग्रहण करते हैं।

कुरियर के इस अंक में, आप पिछले अप्रेल में केन्या में सम्पन्न जनरल कॉउन्सिल बैठकों की रिर्पोट भी पढ़ सकेंगे (पृष्ठ 13 और 14 में), साथ ही ग्लोबल ऐनाबैपटिस्ट–मेनोनाइट शेल्फ ऑफ लिटरेचर की पुस्तकों का नई भाषाओं में अनुवाद की जानकारी भी इस अंक में दी गई है (*लाइफ इन द स्पिरिट समेत*) (पृष्ठ 19), इसके अतिरिक्त, इण्डोनेशिया में 2021 में होने वाले विश्व सम्मेलन और 2019 में कोस्टा रिका में होने वाले रिन्यूवल 2027 के आयोजन की तारीखों की भी घोषणा की गई है। (पृष्ठ 18)।

कार्ला ब्राउन कूरियर की सम्पादिका हैं और मेनोनाइट वर्ल्ड कॉंफ्रेंस के लिए एक लेखिका है। वे विन्नीपेग, कनाडा में रहती हैं।

बड़ी आँधी की सी सनसनाहट

वर्तमान कलीसिया में पवित्र आत्मा की प्रासंगिकता के तीन कारण

नैरोबी, केन्या के ईस्टलेह मेनोनाइट क्वायर को पेन्नसिलवेनिया 2015 सम्मेलन जाने के लिए यूएसए का वीसा नहीं मिल पाया था – इस क्वायर को केन्या के किसुमु में एमडब्ल्यूसी के श्रोताओं के सामने प्रस्तुतिकरण का अवसर दिया गया।

फोटो: विलहेम अंगर

एलिज़ाबेथ कुंजाम

फसह के पचास दिन बाद, यहूदी समुदाय सप्ताहों के पर्व के लिए यरूशलेम में एकत्रित हुआ था। उसी समय, यीशु के चेले पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा के पूरे होने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

जब वे ठहरे हुए थे, ''एकाएक आकाश से बड़ी आँधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूँज उठा . . .। वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस तरह से आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे'' (प्रेरित 2:2, 4)। यीशु के चेले आश्चर्यजनक रूप से ऐसी भाषाएं बोलने लगे जिसे वे जानते तक नहीं थे।

शीघ्र ही, चेलों द्वारा अन्य अन्य भाषाओं में बातें करने का समाचार पूरे यरूशलेम में फैल गया। लोग चकित और अचम्भित हो गए और कुछ लोग सन्देह भी करने लगे।

तब पतरस – वही पतरस जिसने 50 दिन पहले यीशु को जानने तक से इंकार कर दिया था – खड़ा हो कर अपना पहला उपदेश देता है। अब, पवित्र आत्मा की सामर्थ से, पतरस उन हजारों लोगों के सामने खड़ा हो जाता है जिन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिया था। जो भीड़ 50 दिन पहले यीशु को सहन नहीं कर पा रही थी अब ध्यान से यीशु के पक्ष में दिए जा रहे एक उपदेश को सुन रही है।

बताया गया है, कि उस दिन 3,000 लोगों ने यीशु पर विश्वास लाया और कलीसिया में मिल गए।

पतरस ने उस सुबह की घटनाओं की व्याख्या योएल भविष्यद्वक्ता की एक भविष्यद्वाणी के प्रकाश में किया है।

योएल 2:28–29 में, परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा किया था कि वह सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलेगा। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा किया था कि वह सब लोगों को सामर्थ प्रदान करेगा कि वे ईश्वरीय सामर्थ का प्रयोग कर सकें। और यह भविष्यद्वाणी पिन्तेकुस्त के दिन पूरी हुई। इसी तरह से, पिन्तेकुस्त का दिन कलीसिया के जन्म का दिन बना।

रिन्यूवल 2027 में आराधना के दौरान गीत गाते हुए

फोटोः लेन रेम्पेल

रिन्यूवल 2027 में आराधना के दौरान गीत गाते हुए

फोटोः लेन रेम्पेल

रिन्यूवल 2027 में भोजन की संगति करते हुए

फोटोः साभार रियल फोटो केन्या

रिन्यूवल 2027 में प्रतिभागी

फोटोः लेन रेम्पेल

दो हजार वर्ष बाद, यह बात हमारे लिए महत्व क्यों रखती है कि प्रथम मसीही पवित्र आत्मा से भर गए थे?

1. पवित्र आत्मा आज भी कलीसिया को सामर्थ प्रदान करता है

प्रेरित 1:8 में, यीशु ने अपने चेलों से यह प्रतिज्ञा किया था कि उन्हें पवित्र आत्मा की सामर्थ प्रदान की जाएगी कि वे उसके गवाह बन सकें। पिन्तेकुस्त से पहले चेले तितरबितर और दिशाहीन थे। उसके बाद से, उन्होंने स्वयं को यीशु के अनुयायियों के रूप में बेधड़क हो कर प्रस्तुत किया।

उन्हें दी गई सामर्थ उसी दिन समाप्त नहीं हो गई। उन्होंने सामर्थ के काम करते हुए और बीमारों को चंगा किया, मुर्दों को जिलाया, और आराधनालय में वे प्रभु यीशु की गवाही देने लगे। वे निडर हो कर जीवन बिताते थे, और अधिकांश चेले अपने निडर विश्वास के कारण मार डाले गए।

पवित्र आत्मा आज भी कलीसिया को सामर्थ प्रदान कर रहा है। मसीही संस्थाएं मानव तस्करी, विस्थापन, निर्धनता, भूख, हिंसा और युद्ध जैसे विकराल मुद्दों से निपटने के लिए कार्य कर रहीं हैं।

कलीसिया के सदस्य व्यक्तिगत रूप से अपने जीवनों को जोखिम में डालते हैं कि अपने विश्वास के अनुरूप जीवन व्यतीत करें।

कोलोराडो, अमरीका की ग्रेटा लिंडेक्रान्ट्ज़ ने मृत्युदण्ड का समर्थन करने की बजाए जेल जाना पसन्द किया।

दक्षिण कोरिया की सैंग मीन ली ने सरकार द्वारा अनिवार्य की गई सैन्य सेवा को पूरी करने से इंकार कर दिया और 15 महीनों तक कॉंशियस आब्जेक्टर (विवेक की आवाज सुन सेना में अनिवार्य सेवाएं देने से इंकार करने वाला) की तरह जेल में रहे।

कोलंबिया के मेनोनाइट युवाओं ने सशस्त्र बलों में भर्ती होने से इंकार कर दिया क्योंकि वे यह मानते हैं कि यह ''यीशु मसीह की शिक्षाओं और आदर्श के अनुरूप नहीं है।''

भारत में, बढ़ते धार्मिक असहिष्णुता और सताव के मध्य भी विश्वासी मसीह के पीछे चल रहे हैं।

यह सब सिर्फ पवित्र आत्मा की सामर्थ से ही सम्भव है।

2. कलीसिया का स्वाभाव विविध और समावेशी है

पिन्तेकुस्त के दिन, पवित्र आत्मा ने विश्वासियों को सामर्थ प्रदान किया कि वे इकट्ठे हो कर ''परमेश्वर के बड़े बड़े कामों की चर्चा'' अन्य अन्य भाषा में करने लगे जिन भाषाओं में उन्होंने पहले कभी बातें नहीं की थी। इस आश्चर्यकर्म ने सांकेतिक रूप से कलीसिया के विविध स्वाभाव की पुष्टि कीः बहुभाषीय, बहुजातीय, और बहुसांस्कृतिक।

उस समय से, कलीसिया गलीली लोगों का एक सजातीय समूह नहीं, परन्तु सब जातियों के लोगों का समुदाय बन गया, जो मसीह के प्रति अपने प्रेम के कारण एक साथ इकट्ठे हुए थे।

अपने उपदेश में, पतरस ने उस सुबह की घटना की व्याख्या करने के लिए योएल भविष्यद्वक्ता को उद्धरित कियाः

> ''कि परमेश्वर कहता है,
>
> कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा,
>
> कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उण्डेलूंगा
> और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी
> और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे,
>
> और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे।
>
> बरन मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उण्डेलूंगा,
>
> और वे भविष्यद्वाणी करेंगे'' (प्रेरित 2:17–18)।

पिन्तेकुस्त का दिन एक ऐतिहासिक अवसर था क्योंकि परमेश्वर ने उस दिन पुराना नियम में सैकड़ो वर्ष पूर्व की गई अपनी भविष्यद्वाणी को पूरा किया था। पुराना नियम के दिनों में, आत्मा अक्सर सिर्फ भविष्यद्वक्ताओं, याजकों और राजाओं पर ही उण्डेला जाता था। पिन्तेकुस्त के दिन से यह बदल गया। सब विश्वासियों पर पवित्र आत्मा उण्डेला गया चाहे वे किसी भी आयु, लिंग, और आर्थिक वर्ग के रहे हों।

कलीसिया एक ऐसा स्थान बन गई जहाँ सब लोग – युवा और बुजुर्ग, पुरुष और स्त्री – महत्वपूर्ण बन गए। और प्रत्येक ने सामर्थ प्राप्त किया कि वे कलीसिया के जीवन व कलीसिया की सेवा में अपना योगदान दे सकें।

रिन्यूवल 2027: आराधना और स्मरण का एक अन्तर्राष्ट्रीय उत्सव

फोटोः लेन रेम्पल

3. कलीसिया परमेश्वर के राज्य की एक पूर्वझलक है

प्रेरित 2:42–47 में यह दर्शाया गया है कि पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य किस प्रकार से दिखाई देता है।

प्रथम कलीसिया एक साथ एक मन की हो कर रहती थी। वे एक दूसरे के साथ संगति करते थे; वे प्रेरितों की शिक्षाओं को सीखने में समय बिताते थे। वे एक साथ मिलकर प्रार्थना किया करते थे और रोटी तोड़ते थे। वे अपनी सम्पत्ति बेचकर जरूरतमंदों की सहायता करते थे। ''और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था'' (प्रेरित 2:47)।

परमेश्वर के राज्य की विशेषताएं प्रथम कलीसिया में विद्यमान थी। विविधतों के मध्य एकता थी; उनमें संतोष था – उनमें यह इच्छा थी कि वे संगति करें और सीखें बजाए कि विभाजित हो जाएं और एक दूसरे पर हावी हो जाएं; वे हर्ष के साथ और सच्चे मन से एक दूसरे के साथ अपनी वस्तुएं साझा करते थे और एक दूसरे की चिन्ता किया करते थे, उनके मन में कोई लोभ नहीं था; और उनके हृदय में परमेश्वर की स्तुति करने की अभिलाषा थी।

प्रथम कलीसिया वह प्रारूप है जिसके अनुसार हमें चलना है। यह हमारे लिए एक आदर्श है कि हम यह जाँचे कि हमारे बीच में परमेश्वर का राज्य किस प्रकार से विद्यमान है।

हमारे सामने बिछाई गई मेज

जॉन ड्राइवर, ने अपनी पुस्तक, *लाइफ टूगेदर इन द स्पिरिट,* में ''बंधुत्व सहभागिता की मेज'' का एक सुन्दर चित्रण किया है।

एमडब्ल्यूसी के माध्यम से, हमारे सामने बंधुत्व सहभागिता की मेज बिछाई गई है। इस मेज पर संसार भर के लोग हैं, जो कलीसिया को सामर्थ प्रदान करने के पवित्र आत्मा के कार्य की गवाहियों को एक दूसरे के साथ बाँटते हैं; परमेश्वर के बड़े बड़े कामों की चर्चा करते हैं; और हमें मसीह की देह में एक करते और शामिल करते हैं।

जब हम इन गवाहियों को सुनते हैं, हमें पवित्र आत्मा की सामर्थ पर विश्वास करने की प्रेरणा मिले और हम पवित्र आत्मा को अपने भीतर और अपने द्वारा काम करने दें।

हमारी पीढ़ी की ओर जिस प्रकार की समस्याएं आँखे तरेर रहीं हैं, वे कलीसिया के लिए एक बुलाहट हैं कि वह सक्रिय हो कर हस्तक्षेप करे। मात्र मानवीय प्रयासों से इन समस्याओं से निपट पाना सम्भव नही है। वैश्विक ऐनाबैपटिस्ट परिवार में पवित्र आत्मा की सामर्थ और एकता की भावना आवश्यक है ताकि कलीसिया एक ऐसे स्तर तक उठ सके जिससे संसार के सामने गवाही रखी जा सके; और परमेश्वर के राज्य के मूल्य दिखाई दे सकें।

एलिज़ाबेथ कुंजाम मेनोनाइट ब्रदरन चर्च इन इण्डिया की एक सदस्या है। उन्होंने डीकन्स कमीशन में 2015 से 2018 तक अपनी सेवाएं दी हैं।

उन्होंने 21 अप्रेल 2018 को केन्या के किसुमु में रिन्यूवल 2027 – पवित्र आत्मा हमें परिवर्तित कर रहा है – के अवसर पर वचन से प्रचार किया। यह लेख उनके इसी सन्देश से लिया गया है।

पवित्र आत्मा का दानः 16वीं शताब्दी में और आज

आरम्भिक ऐनाबैपटिस्ट माइकल और मारगरेथा सेट्लर का स्विट्ज़रलैण्ड में स्मारक पत्थर

फोटोः जार्ज हेम्स, विकिमिडिया कॉमंस

आरम्भिक मेनोनाइट प्रभाव को दर्शाती काठकलाः माइकल हॉफ्फमैन

अल्फ्रेड न्यूफेल्ड

आरम्भिक मेनोनाइट आंदोलन के समय की अनेक लिखित गवाहियाँ यह संकेत देती हैं कि पवित्र आत्मा का कार्य ही केन्द्रीय प्रेरक बल है। पवित्र आत्मा उन लोगों के पास जाता है जो उसके लिए ठहरे हुए हैं। ऐसा पिन्तेकुस्त के दिन हुआ था (प्रेरित 2) जब चेले प्रार्थना कर रहे थे; ऐसा ही धर्मसुधार के समय भी हुआ; और आज भी ऐसा ही होता है।?

प्रेरितों के समय से लेकर लुथर के समय तक पवित्र आत्मा का कार्य.

ऐनाबैपटिस्ट और प्रोटेस्टेंट लोगों को यह बात सावधानीपूर्वक स्मरण रखना है कि मसीही कलीसिया का आरम्भ उनके द्वारा नहीं किया गया है। धर्मसुधार के 1500 वर्ष पहले भी पवित्र आत्मा के बहुत से कार्य और फलों को देखा गया है। हम उन प्रथम मसीही शहीदों को स्मरण करें, जो पवित्र आत्मा की सामर्थ से, अपना जीवन देने को भी तैयार थे और प्राण देने तक विश्वासी बने रहें। ऐसे बहुत से गुप्त विश्वासी रहे हैं जो मठों, गुफाओं, मरूस्थलों में और अक्सर कलीसियाई नेतृत्व के महत्वपूर्ण पदों में रह कर पवित्र आत्मा से भर जाने के यत्न में लगे रहे और पवित्र आत्मा की सामर्थ और ज्ञान में हो कर अपना कार्य किया। और ऐसे बहुत से मिशनरी हुए जो यूरोप, रूस, भारत, और उत्तर अमरीका में सुसमाचार ले कर आए, और इस बात को प्रमाणित किया कि परमेश्वर का आत्मा भेजने वाला आत्मा है, जो सारी सांस्कृतिक बाधाओं को पार करने को आतुर है।

धर्मसुधार के समय पवित्र आत्मा का कार्य

लूथर, ज्विंगली, और केल्विन सब ने परमेश्वर के आत्मा की ओर संकेत किया जब उन्होंने बाइबल आधारित अनुग्रह के सुसमाचार को नए सिरे से जाना और इसे एक नई परिभाषा दी। इससे न सिर्फ आत्मिक शान्ति और चैन का एक गहन अनुभव प्राप्त हुआ, बल्कि, यह ''धर्म से मुक्ति'' और ''सामाजिक अत्याचार से मुक्ति'' से लेकर आया। थॉमस मुन्ट्ज़र, यद्यपि बाद में गलत रास्ते की ओर भटक गए, पर उन्होंने पवित्र आत्मा के विषयों को सामाजिक न्याय और कंगालों व वंचितों के अधिकारों पर लागू किया। मेलकोयर हॉफ्फमैन ने आने वाले नए यरूशलेम पर पवित्र आत्मा उण्डले जाने का एक बहुत ही विशेष आत्मिक संवेदनशीलता के साथ वर्णन किया है।

पवित्र आत्मा और 1525 में ज्यूरिख में ऐनाबैपटिस्ट आरम्भ

ज्विंगली के समय के युवा विद्वानों ने बहुत ही आरम्भिक चरण में पवित्रशास्त्र के अधिकार का सम्बन्ध पवित्र आत्मा की अगुवाई और मार्गदर्शन में कलीसिया के व्यवहार व कार्य के साथ जोड़ा था। 1523 के अक्टूबर में एक वादविवाद में उन्होंने ज्विंगली के सामने यह चुनौती रखी कि वह नगर परिषद के निर्णय को पवित्र आत्मा के अधिकार की तुलना में नीचे का महत्व दें। कानरेड ग्रेबल ने इसे इस तरह से व्यक्त किया: ''परमेश्वर का आत्मा अपना निर्णय दे चुका है।''

21 जनवरी 1525 की रात, ''ज्यूरिख परिषद द्वारा यह आदेश जारी कर दिया गया कि आगे से वे अपने विश्वास का प्रचार नहीं कर सकेंगे तब फेलिक्स मांज के घर में 15 भाई एकत्रित हुए। ऐसा बताया गया है कि वे प्रार्थना करने के बाद उठे, और पवित्र आत्मा की प्रेरणा से, जार्ज ब्लावरॉक ने कानरेड ग्रेबल से कहा कि वह उन्हें उनके

स्विट्ज़रलैण्ड में लिम्मत नदी में डूबो कर मार डाले गए ऐनाबैपटिस्ट शहीदों का स्मारक

फोटोः रोलैण्ड ज़, विकिमीडिया कॉमंस

विश्वास के अंगीकार के आधार पर बपतिस्मा दे . . .।''

बहुत जल्दी ऐनाबैपटिस्ट लोगों के सामने एक बार फिर से एक नई समस्या आ गईः ''क्या स्विस राष्ट्रवाद या यूरोप की सुरक्षा अहिंसा और शत्रुओं से प्रेम रखने की परमेश्वर की आज्ञा से ऊपर है? स्विट्ज़रलैण्ड के ऐनाबैपटिस्ट विश्वासियों ने थॉमस मुंट्ज़र और कृषकों के आंदोलन में शामिल होने वाले अन्य लोगों पर जोर डाला कि वे हथियार न उठाएं, परन्तु भरोसा रखें कि परमेश्वर का आत्मा हस्तक्षेप कर कुछ करेगा। और जब माइकल सेट्टलर ने श्लेयथियम अंगीकार को लिखा, मण्डली ने इस बात को स्पष्ट कर दिया कि मसीही लोग ''आत्मा की तलवार'' उठाने के द्वारा ''भौतिक तलवार'' का त्याग कर देते हैं।''

जब माइकल पर मृत्यु दण्ड देने के लिए मुकद्दमा चलाया जा रहा था तब उन्होंने कहा कि ''मुसलमानों को मारने वाली एक मसीही सेना का हिस्सा बनने की बजाए वह एक मुसलमान के हाथों मरना अधिक पसन्द करेंगे।

इस तरह से, शान्ति की गवाही और आत्मा की सामर्थ ऐनाबैपटिस्ट परम्परा में बहुत ही निकटता से जुड़े हुए हैं।''

हमारे समय में पवित्र आत्मा

जब मेनोनाइट और पेन्टीकॉस्टल लोग 2006 में पसादेना में अजुसा स्ट्रीट रिवाइवल के सौ वर्ष पूर्ण होने का उत्सव मनाने को एकत्रित हुए, तो उन्होंने यह पाया कि पुनर्जागरण आंदोलन और ऐनाबैपटिस्ट आंदोलन में अनेक बातें समान हैं, जिसमें मिशन, अहिंसा, नए आत्मिक जन्म का सिद्धान्त और आत्मा का बपतिस्मा शामिल हैं।

उपसंहार

मेरे विचार से ऐनाबैपटिस्ट आंदोलन ने पवित्र आत्मा के धर्मविज्ञान और व्यवहार के सम्बन्ध में तीन अति महत्वपूर्ण पहलुओं को फिर वापस प्राप्त किया हैः

1. आत्मा मसीह में सत्य और एक नये जीवन की ओर ले जाता है।
2. आत्मा निर्बलता और सताव में शक्ति प्रदान करता है।
3. आत्मा अवरोधों (सांस्कृतिक, सामाजिक, और राष्ट्रीय) को तोड़ता है और मिशन की ओर बढ़ता है।

पौलुस ने इस अनुभव को 2 तीमुथियुस 1:7–8 में इस तरह से व्यक्त किया हैः ''क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ, और प्रेम, और सयंम की आत्मा दी है। इसलिए हमारे प्रभु की गवाही से . . . लज्जित न हो।''

अल्फ्रेड न्यूफेल्ड 2009 से 2018 तक फेथ एण्ड लाइफ कमीशन के अध्यक्ष थे। कुछ समय पहले ही उन्हें यूनिवर्सिडाड इव्हांजेलिका डेल पैरागुए इन असन्सियन, पैरागुए के प्रमुख के रूप में अपनी सेवाएं दी। वे वेरियनगुंग डेर मेनोनाइटेन ब्रुडरगेमियनडेन पैरागुए (मेनोनाइट ब्रदरन) के सदस्य हैं।

उन्होंने केन्या के किसुमु में 21 अप्रेल 2018 रिन्यूवल 2027 – पवित्र आत्मा हमें परिवर्तित कर रहा है – में व्याख्यान दिया। यह लेख उनके इसी व्याख्यान से लिया गया है।

दृष्टिकोण

21 अप्रेल 2018 को केन्या के किसुमु में रिन्यूवल 2027 – पवित्र आत्मा हमें परिवर्तित कर रहा है – आयोजन के अवसर पर अनेक लोगों ने गवाही दी कि वे किस तरह से कलीसिया के लोगों में परिवर्तन लाने के पवित्र आत्मा के कार्य को अनुभव कर रहे हैं। इस स्तम्भ के अनेक लेखों को इन्हीं गवाहियों में से लिया गया है। पवित्र आत्मा के परिवर्तन लाने वाले कार्य की अन्य गवाहियाँ भी है।

स्विट्ज़रलैण्ड

सुनने के लिए तैयार एक परिवर्तित आत्मा

जर्ग ब्राकर

यह समय था कलीसिया समुदाय दिवस के लिए साथ एकत्रित हो कर उत्सव मनाने का – परन्तु किस बात का उत्सव मनाएं? वर्तमान समय में पतन के भय के मध्य अतीत के अपने लम्बे इतिहास में परमेश्वर की विश्वासयोग्यता का उत्सव? कलीसियाओं में आज भी विद्यमान हमारी समृद्ध विरासत का उत्सव?

पिछले 15 वर्षों में, स्विस मेनोनाइट कलीसियाओं में ऐसा कोई सम्मेलन नहीं हुआ था। इस सम्मेलन के लिए तैयारी करने के लिए दो वर्षों का समय लगा।

स्विज़ मेनोनाइट कॉंफ्रेंस की प्रत्येक कलीसिया से प्रतिनिधि – एक वयस्क और एक बच्चा – भविष्य की अपनी आशा के पत्र के साथ खड़े हुए। फोटोः साभारः जर्क ब्राकर

हमने अपने उत्सव के दौरान ध्यान केन्द्रित करने के लिए एक मूलविषय का चुनाव करने के लिए काफी समय दिया।

- किसी ने सुझाव दिया कि जब हम एक साथ एकत्रित होंगे, तो हमारी सभी 14 कलीसियाओं की विशिष्ट पहचान को सामने लाना चाहिए, रेखाचित्रों का परिदृश्य जिसमें देहधारी मसीह के सुसमाचार की समृद्धि को कलीसिया समुदायों के अनेक रूपों में, जो एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं, दर्शाया जाए।
- किसी और ने सुझाव दिया कि यूहन्ना के प्रकाशितवाक्य में सात कलीसियाओं को लिखी गईं पत्रियों को प्रारूप बनाया जाए। कलीसियाओं को आमंत्रित किया जाए कि वे यह कल्पना करते हुए पत्र लिखें कि वर्तमान में परमेश्वर उनकी कलीसियाओं के विषय में क्या कहेगाः कलीसिया पर मण्डरा रहे खतरे, कलीसियाओं में पाई जाने वाली अच्छी बातें और उनकी कमजोरियाँ।
- किसी और ने कहा कि हमारी कलीसियाओं को नवजागृति हेतु प्रोत्साहित किए जाने की आवश्यकता है, भविष्य के लिए उनके सामने एक दर्शन लाने की आवश्यकता है जो आने वाले वर्षों में हमारी अगुवाई करे।

हमने एक दूसरे की बातों को सुना। जो चर्चाएं की गईं, उन्हें ध्यान में रखते हुए हम अपने अपने स्थानों को लौटे, इस विषय पर प्रार्थनाएं की, अन्य समूहों के साथ इन पर चर्चा की।

जब हम फिर से साथ इकट्ठे हुए, हमारे मन में एक पत्र लिखने का विचार आया। परन्तु प्रकाशितवाक्य की पत्रियों को प्रारूप के रूप में लेने की बातों को लेकर हम असमंजस में थे। परमेश्वर के दृष्टिकोण से कौन बोल सकता है? इससे एक दूसरे पर दोष लगाने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल सकता है।

हमारी कलीसियाओं के प्रति हमारे हृदयों में जो विचार आ रहे थे उन्हीं के आधार पर, हमने अन्त में यह निर्णय लिया कि हम अवश्य ही कलीसियाओं को आमंत्रित करेंगे कि वे हमारे डिनॉमिनेशन की अन्य कलीसियाओं को पत्र लिखे।

परन्तु यह पत्र आशा का एक पत्र हो। अगले 10 वर्षों की कल्पना करते हुए, वे समय की ओर मुड़ कर देखें कि हमारे सामने क्या है। पत्र में यह वर्णन करें कि किस प्रकार से परमेश्वर ने उनकी अगुवाई की, वे किन मार्गों पर चले, उनके जीवन में क्या क्या परिवर्तन आए।

हमने उन्हें आमंत्रित किया कि वे अपनी अपनी कलीसियाओं के भविष्य की प्रगति के विषय में अपने स्वप्नों को लिखें।

क्या कलीसियाएं ऐसा करेंगी? क्या वे दूसरों के सामने अपनी कमजोरियों को उजागर करना पसन्द करेंगी? हम बिल्कुल नहीं जानते थे कि क्या वे इस पर कार्य करने को तैयार हैं।

हमने यह जोखिम उठाया।

उस दिन का मूल विषय होगा, ''सुबह की हवा।'' पत्रों के माध्यम से, हमने आशा की कि हम ताजी श्वाँस लेंगे, भविष्य की एक सुगन्ध जिसे परमेश्वर ने हमारे हृदयों में डाला है।

परमेश्वर के आने वाले राज्य की सुबह की बयार हमारे स्वप्नों में एक सुगन्ध के समान पहले से ही उपस्थित थी।

कलीसियाओं का प्रत्युत्तर अद्भुत था।

- कुछ कलीसियाएं दो पत्र लिखना चाहती थी क्योंकि वे एक नयी कलीसिया आरम्भ करने वाले थे।
- अनेक कलीसियाएं यह चर्चा करने के लिए एकत्रित हुईं कि वे आज से अगले 10 वर्षों को किस तरह से देखती हैं।
- अधिकांश कलीसियाओं ने एक बेधड़क पत्र लिखा, साहस से भरा हुआ पत्र। वे आने वाली चुनौतियों को जानती थीं। परन्तु वे आने वाले इन परिवर्तनों को किसी नई चीज के जन्म के रूप में देख रहीं थी जिसकी वे आशा कर रहीं थी।

यह पवित्र आत्मा के द्वारा लाया गया पहला परिवर्तन था। हमें हवा में सुगंध पहले ही मिल चुकी थी। विश्वासयोग्य परमेश्वर हमारे भविष्य को बुनते हुए वर्तमान में हमसे मिलने को आया।

समुदाय दिवस के लिए, हमने सभी पत्रों को बैनरों पर छपवा लिया। बड़ी आतुरता के साथ, सभी कलीसियाओं के लोग यह पढ़ने को एकत्रित हुए कि दूसरों ने क्या लिखा है।

यह दिन कलीसियाओं के लिए एक दूसरे के प्रति एक शपथ का दिन बन गयाः हम आपके लिए प्रार्थना करेंगे, कि परमेश्वर ने जो कुछ आपके हृदय में डाला है उसे पूरा करे, भले ही यह अपने भविष्य के विषय में हमारी कल्पनाओं से बिल्कुल अलग हो।

यह एक **दूसरा परिवर्तन** था। हमने इस बात को जाना और दृढ़ किया कि परमेश्वर अपने सुसमाचार को भिन्न भिन्न तरीको से देहधारी बना रहा है जो एक दूसरे के पूरक हैं।

उस दिन, आखिर में, मैंने मण्डलियों ने कहा कि वे पत्रों वाले पैनल को लेकर आगे आएं। जैसे ही बैनर कक्ष में आगे बढ़े, मैंने अचानक देखा कि वे पालवाले जहाजों की तरह दिखाई दे रहे हैं, जो परमेश्वर की बहाई वायु के अनुसार आगे बढ़ने को तैयार हैं।

तब से लेकर दो वर्षों में, हमने इन में से कुछ स्वप्नों को पूरा होते हुए देखा है।

एक कॉंफ्रेंस के रूप में, हम उन समान आशाओं की खोज कर रहे हैं जो हमें एक कर जोड़ती हैं। कुछ भिन्नताएं हमारे बीच तनाव उत्पन्न कर सकती हैं जो हमारी एकता के लिए एक खतरा है और जिन पर चर्चा करने की आवश्यकता है। परन्तु इन पत्रों का खुलापन और सच्ची प्रार्थनाएं एक दूसरे के प्रति नए सिरे से प्रेम को प्रज्जवलित करती हैं ताकि हम कठिन मुद्दों को सुलझा सकें, कहीं ऐसा न हो कि वे हमारी एकता को तोड़ दें।

एक दूसरे को सुनने की एक प्रक्रिया में, कि परमेश्वर ने प्रत्येक हृदय में क्या डाला है, स्थानीय कलीसिया और कॉंफ्रेंस दोनों स्तर पर, हमने यह अनुभव किया कि परमेश्वर का आत्मा हमें परिवर्तित कर रहा है।

– जर्ग ब्रेकर डीकन कमीशन के एक सदस्य हैं। वे कॉंफ्रेंस डेर मेनोनाइटेन डेर श्वेज (द ऐनाबैपटिस्ट चर्च इन स्विट्ज़रलैण्ड) के महासचिव हैं।

उन्होंने केन्या के किसुमु में 21 अप्रेल 2018 को आयोजित रिन्यूवल 2027 – पवित्र आत्मा हमें परिवर्तित कर रहा है – में व्याख्यान दिया। यह लेख उसी व्याख्यान से लिया गया है।

जिम्बाब्वे

प्रार्थना के उत्तर के द्वारा परिवर्तित एक आत्मा

बारबरा नकाला

पवित्र आत्मा त्रिएकत्व– परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र, और परमेश्वर पवित्र आत्मा – का तीसरा व्यक्ति है (मत्ती 28:19)। मेरी कलीसिया, ब्रदरन इन ख्राइस्ट (बीआईसीसी) इन जिम्बाब्वे यही शिक्षा देती है। हम पवित्र आत्मा को अपनी आँखों से नहीं देख सकते, परन्तु परमेश्वर को उसके आत्मा के द्वारा कार्य करते हुए देख सकते हैं, और इसका परिणाम हमेशा ही चकित और विस्मित कर प्रेरणादायी होता है।

जब मैं एक छोटी लड़की थी, तो हमें परमेश्वर पिता, और यीशु, जो बच्चों का महान दोस्त, और हमारा उद्धारकर्ता है, के विषय में सिखाया जाता था। पवित्र आत्मा का उल्लेख बहुत कम किया जाता था, यद्यपि हमारे द्वारा गाए जाने वाले गीतों में इस शान्तिदाता और शिक्षक की सामर्थ पर विश्वास जताया जाता था।

सुज़ेन नगुलुब उस वाहन के साथ जिसे बीआईसीसी की बहनों ने बिशप की पत्नी के लिए 2011 में खरीदा। यह अब तक अच्छी हालत में है। फोटोः बारबरा नकाला

हम अन्य विश्वासियों के साथ चर्च जाते रहे कि प्रार्थना, बाइबल अध्ययन, सण्डे स्कूल, गीत, भेंट और उपदेश के माध्यम से परमेश्वर की आराधना करें।

अनेक वर्षों तक, हमारी कलीसियाओं ने बाइबल की अच्छी शिक्षा दी, परन्तु आराधना में हमारे व्यवहार, यद्यपि तरीका सहीं था, नैतिकता के अनरूप नहीं थे, विशेष रूप से दसवांश देने में और साथ ही भेंट सहित अन्य देनदानियों के सम्बन्ध में।

उसके बाद पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व के विषय में शिक्षा दी जाने लगी। मैंने देखा कि लोगों का रवैया बदल रहा है। जब एक कलीसिया पवित्र आत्मा की परिवर्तित करने वाली सामर्थ को कार्य करने देती है, तो हमें प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और सयंम के फल दिखाई देने लगते हैं (गलातियों 5:22, 23)।

अब प्रार्थना का समय वास्तव में परमेश्वर के साथ सच्ची सहभागिता करने का समय बन गया है।

स्तुति गान के समय, क्वायर सच्चे मन से परमेश्वर की आराधना करती है, और शेष मण्डली को परमेश्वर की उपस्थिति का बोध कराने में सफल हो जाती है। गीतों के बोल अब एक नया अर्थ प्राप्त कर चुके हैं।

भेंट देने में सुधार आ रहा है। अब विश्वासी इसलिए दसवांश और भेंट नहीं देते क्योंकि उन्हें नियम का पालन करना है; परन्तु वे अब प्रेम, आनन्द और कृतज्ञ हृदयों के कारण ऐसा करते हैं। जिस तरह से 2 कुरिन्थियों 8 में मकिदुनिया के लोग उदारता से दिया करते थे, वैसी उदारता अधिकांश लोगों में आसानी से नहीं आ पाती, परन्तु अब हम एक ऐसे परिवर्तन को लगातार देख रहे हैं जिसका श्रेय सिर्फ पवित्र आत्मा के कार्य को ही दिया जा सकता है।

हमने पवित्र आत्मा के कार्य का एक उदाहरण 2011 में देखा, जब मत्शबेजी मिशन में बीआईसीसी महिला सम्मेलन का आयोजन किया था।

सम्मेलन के अन्तिम दिन, प्रचारिका सिलिवाजिसो न्हनिजियो ने उत्पत्ति 9:17–26 पर सन्देश दिया। गहरा विश्वास रखने वाली इस प्रिय बहिन ने कलीसिया के सामने चुनौती रखी कि हमारे आत्मिक माता पिता, हमारे पासवान, और अगुवों का ध्यान रखा जाना चाहिए जो कमी और आवश्यकताओं में अपना जीवन बिता रहे हैं।

उन्होंने कदम और आगे बढ़ते हुए कहाः ''बिशप साहब की पत्नी न्डलोवु पैदल जा जा कर बीमारों और शोकितों से मुलाकात करती हैं और कलीसिया के बहुत से रोज के कामों को भी पैदल चल कर ही पूरा करती है, या सवारी बसों से आना जाना करती है। तौभी हम आराम से रहते हैं और अच्छी अच्छी कारों से आना जाना करते हैं। क्या यह सहीं है? आज हम इसलिए भेंट दें, कि हमारे बिशप साहब की पत्नी के लिए एक कार खरीद सकें। बहिनों, दीजिएः एक बीज बोएं ताकि परमेश्वर की सेवा करने में बिशप साहब की पत्नी के जीवन को सरल बना सकें।

आज हम 5000 डालर देंगे ताकि उस वाहन को खरीद सकें। आप उनके लिए जो भी करेंगे, वह आप परमेश्वर के लिए कर रहे हैं।''

यह अनेक लोगों के लिए एक भारी भरकम आदेश के समान था जो सामान्यतः बहुत ही कम दिया करते थे।

आश्चर्यों का आश्चर्य, महिला बहनों ने इतना अधिक देने का संकल्प लिया कि यह निर्धारित राशि से भी अधिक हो गया। हम सब ने यह मान लिया कि पवित्र आत्मा कार्य कर रहा है। जिस 10 सीटर वाहन को हमने खरीदा उसका उपयोग आज भी बिशप साहब की पत्नी और कलीसिया की अन्य बहनों द्वारा कलीसिया के कार्यों के लिए आने जाने में किया जा रहा है।

सिलिबाजिसो ने आगे कहाः ''मेरी आत्मा महसूस कर रही है कि यहाँ कुछ ऐसी बहिने हैं जिन्हें गर्भधारण में समस्या आ रही है। आपके हृदय बच्चों के लिए तरस रहे हैं। आप में से कुछ बहने अब आशा छोड़ रहीं हैं। परमेश्वर पर आशा रखना कभी न छोड़ें!''

अनेक स्त्रियाँ प्रार्थना के लिए सामने लपक पड़ीं।

छह वर्ष बाद, बीआईसीसी के वार्षिक महिला सम्मेलन के दौरान, लोववेयन महलंगा, जो एक वरदान प्राप्त शिक्षिका और सम्मेलन की वक्ता थीं, और जिनका विवाह बीआईसीसी लोबेंगुला, बुलवायो के एक सुसमाचार प्रचारक से हुआ था, ने अपनी व्यक्तिगत गवाही दी।

''मत्शेबेजी (2011 का महिला सम्मेलन) में यीशु से मेरी एक खास तरीके से मुलाकात हुई,'' उन्होंने कहा, ''मैं आगे जाने से संकोच कर रही थी। मेरा गर्भ चार बार गिर चुका था। इससे पहले भी मेरे लिए काफी प्रार्थनाएं की जा चुकी थीं, परन्तु अनेक बार मेरी आशा टूट चुकी थी।

मैंने पाया कि मैं अनिच्छा से आगे की ओर जा रहीं हूँ, और मेरे चेहरे से आँसू बह रहे हैं। जैसे ही प्रार्थना की गई परमेश्वर ने मुझे स्पर्श किया।

शीघ्र ही मैंने गर्भधारण कर लिया, यह समय मेरे लिए आनन्द और चिन्ता का एक मिश्रित समय था। नौ महिने बाद, मैं अस्पताल गई और आपरेशन से मेरा बच्चा पैदा हुआ। जब मैं थियेटर में थी तो मैंने अपने बच्चे के रोने की आवाज सुना और मैंने कहा, 'परमेश्वर तू कितना भला है! तू विश्वासयोग्य है। तू यहोवा है और तू ही सारी आराधना के योग्य है!'

जबकि आप यहाँ पर बैठे हुए हैं, आप कुछ बातों को मन में रखे हुए यह विश्वास करते होंगे कि वह उन्हें आप को देगा। विश्वास रखें कि परमेश्वर आपके जीवन में एक बड़ा काम करने वाला है। मुझे एक बेटी उत्पन्न हुई। मैंने एक और बच्चे के लिए प्रार्थना किया, और परमेश्वर ने मुझे एक बेटा दिया, जिसका नाम हमने जॉशुआ रखा।''

क्या पवित्र आत्मा हमारे बीच में जीवनों और परिस्थितियों को परिवर्तित कर रहा है? जी हाँ, पवित्र आत्मा ऐसा कर रहा है! जिस पवित्र आत्मा ने मिशनरियों को यहाँ लाया जिन्होंने हमें सुसमाचार दिया और स्कूल और अस्पतालों की स्थापना की, वही आत्मा वर्तमान में भी कार्य कर रहा है, और परमेश्वर के राज्य की स्थापना कर रहा है।

बारबरा नकाला दक्षिण अफ्रीका के लिए एमडब्ल्यूसी के क्षेत्रीय प्रतिनिधि हैं। वे बीआईसी चर्च इन जिम्बाब्वे की सदस्या हैं।

उन्होंने 21 अप्रेल 2018 को किसुमु, केन्या में आयोजित रिन्यूवल 2027 – पवित्र आत्मा हमें परिवर्तित कर रहा है – पर व्याख्यान दिया। यह लेख उसी व्याख्यान से लिया गया है।

कोलम्बिया

साहस की एक परिवर्तित आत्मा

ऑस्कर सुआरेज़

मुझे वह समय स्मरण आता है जब मेरा परिवार लबाग्य के मेनोनाइट चर्च में पहली बार गया। दो भाइयों ने हमें गर्मजोशी से गले मिलकर स्वीकार किया मानों वे हमें पहले से जानते हों। उन्होंने हमारा इस तरह से अभिवादन किया मानों हम उस परिवार का अंग हो, उन्होंने हमें यह अहसास दिया कि हम उनके अपने हैं। इसलिए हम अगले रविवार फिर से इसी चर्च गए, और फिर अगले रविवार को भी, और फिर हम वहीं जाने लगे।

पिछले 12 वर्षों में, मेरा परिवार धीरे धीरे कलीसिया के किचन से लेकर सण्डे स्कूल में शिक्षा देने, और कलीसिया में अगुवाई देने सहित कलीसिया की अन्य अनेक सेवकाईयों में सक्रिय हो गया।

यह सब इसलिए हुआ क्योंकि परमेश्वर ने एक बहुत ही विशेष व्यक्ति को हमारे पास भेजा कि पवित्र आत्मा की परिवर्तित करने वाली शक्ति को जानने में हमारी सहायता करे।

मेरे माता पिता एक दूसरे से अलग होने ही वाले थे। हर रात, दोनों के बीच जोर जोर से झगड़ा होता था। मेरी माता ने मन बना लिया था कि वह परिवार को छोड़ कर कहीं और जा कर रहेगी, परन्तु कुछ ही सप्ताहों के बाद, मेरे पिता ने हिम्मत दिखाई कि वे अपने विवाह को बचा पाने के लिए कदम उठाएं।

पारिवारिक संकट के इस पीड़ादायक समय में, पवित्र आत्मा द्वारा भेजे गए इस व्यक्ति ने हमें कलीसिया आने के लिए आमंत्रित किया।

मुझे शनिवार की वह रात अच्छी तरह से याद है जब मेरे पिता ने हमें सोने के लिए जल्दी भेज दिया क्योंकि अगले दिन वे हमें साथ लेकर चर्च जाने वाले थे। मुझे उन पर हँसी आ गई। ''आप चर्च जाएंगे?!''

मेरे पिता ने सिर नीचे किया और फिर से अपने आदेश को दोहराया।

ग्रहण करने वाला एक स्थान

कलीसिया में मैंने बहुत सी बातों को सीखा।

सण्डे स्कूल में यह सिखाया गया कि हम सब का महत्व बराबर है। ''आप भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जितना कि उपदेश देने वाले सियाने लोग।'' यह बात मेरे मन में पूरे समय गूंजने लगी। स्कूल में, मैं तिरिस्कृत महसूस किया करता था, शायद इसलिए क्योंकि मैं हीन भावना से ग्रसित था। 11 वर्षीय एक बालक के रूप में, जब मैं यह सुनता था कि मेरा भी उतना ही महत्व है जितना कि दूसरों का, तो मैंने यह निर्णय लिया कि मैं इस कलीसिया का हिस्सा बन कर यहीं रहूँगा।

जब मैंने चर्च जाना आरम्भ नहीं किया था, तो मेरा सपना वायु सेना में शामिल होने का था। कोलम्बिया में, 18 वर्ष पूर्ण

ऑस्कर सुरेज़ (बांए) रिन्यूवल 2027 में स्पेनिश गीत गाने में बैण्ड सदस्य मुस्सी फेस्सेहा किड्दाने (दाएं) की सहायता करते हुए। फोटोः रियलफोटो केन्या

करने पर सभी युवाओं के लिए सेना में भर्ती होना अनिवार्य है। मैं स्कूल में अपने मित्रों से नागरिकों के रूप में अपने ''कर्तव्य'' के विषय में बातें किया करता था। परन्तु मैं यीशु को जितना अधिक जानता गया, पवित्र आत्मा उन स्वप्नों में उतना ही अधिक परिवर्तन लाता गया।

इसलिए जब मैंने पहली बार 14 वर्ष की आयु में सेना में भर्ती होने के विरूद्ध आपत्ति उठाने की मेनोनाइट शिक्षा के विषय में सुना तो हिंसा और झगड़े के मुद्दों पर कलीसिया के पक्ष को जानकर मैं अत्यंत प्रभावित हुआ।

जस्तापाज़ की सेवकाई के लिए धन्यवाद, मैं अब सेना में भर्ती होने से मना करने का मन बनाने लगा। (जस्तापाज़ मेनोनाइट चर्च इन कोलम्बिया की एक संस्था है जो अहिंसक कदम उठाने के द्वारा एक शान्तिपूर्ण समाज की स्थापना के लिए यीशु के पीछे चलने के कार्य करती है)।

यद्यपि विवेक की आवाज सुनकर सेना में सेवाएं देने से मना करना सरल नहीं होता, परन्तु मेरी मण्डली के सहयोग ने मेरे संकल्प को बल प्रदान किया। इस चुनौती ने मेरे परिवार, मेरी कलीसिया, और मेरे समुदाय को एक साथ ला दिया।

अगुवाई करने के लिए एक स्थान

कलीसिया ने मुझे अवसर दिया कि मैं नेतृत्व, विवेक की आवाज सुनकर आपत्ति करने की शिक्षा, और ऐनाबैपटिस्टवाद पर आयोजित सेमिनारों में भाग ले सकूं।

पवित्र आत्मा ने मेरे सोचने के तरीके में तब परिवर्तन लाया जब मैं पड़ोस के एक बहुत ही जरूरतमंद स्थान, कोमबेयमा में एक परियोजना में वालेंटियर के रूप में अपनी सेवाएं देने लगा।

पहले पहले, मैं बाइबल अध्ययन से पहले संगीत में सहायता करने के लिए जाया करता था। एक वर्ष बाद, हमारे मन में यह विचार आया कि हम एक संगीत शाला आरम्भ करें ताकि बच्चे अपना खाली समय अच्छे तरीके से बिता सकें, और सेक्स अपराध, चोरी, और नशाखोरी की अपनी पृष्ठभूमि से बाहर आ कर कुछ अलग कर सकें।

हम दो टूटे हुए गिटार, एक कीबोर्ड, और घर पर ही बनाए हुए एक ड्रम सेट की सहायता से संगीत सिखाने लगे।

संगीत सिखाते हुए, मैंने देखा कि यह हमारे लिए समाज में परिवर्तन लाने का एक अवसर हो सकता है। मैं इस अनुभव के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। मैंने संगीत सीखना आरम्भ किया ताकि मैं इस प्रकार की परियोजनाओं में पेशेवर तरीके से योगदान दे सकूं।

2013 में, मेरे सहपाठियों के साथ मिलकर मैंने जारिस (जेएआरआईएस) नाम एक समूह का गठन किया कि हम परमेश्वर के लिए संगीत तैयार करें और कमजोर समुदायों में संगीत सीखा सकें। कुछ समय बाद, आईओएम (इन्टरनेशनल ऑर्गनाईज़ेशन फॉर माइग्रेशन) और कोलम्बियन मिनिस्ट्री ऑफ हेल्थ की ओर से हमें एक अनुदान मिल गया कि हम किशोरियों को गर्भवती होने से बचाने की परियोजना पर कार्य कर सकें।

अब, हमारे पास अच्छी हालत में चार गिटार, तीन की–बोर्ड, और एक सचमुच का ड्रमसेट था।

जब यह परियोजना पूरी हो गई, तो कलीसिया ने मुझे सेवा के लिए अन्य अवसर प्रदान किए।

हम हमेशा अपना अभियान गली कूचों में रहने वाले लोगों के बीच चलाते हैं, उन्हें नहलाते हैं, कपड़े पहनाते हैं, उन्हें भोजन देते हैं, उनके बाल कॉटने के लिए एक दिन निर्धारित करते हैं, और उनकी बातों को सुनने और यीशु के प्रेम को उनके साथ बाँटने के लिए अलग से समय निकालते हैं।

पवित्र आत्मा एक समुदाय के रूप में हमें प्रेरणा देता है कि हम जरूरतमंदों की सेवा करें।

आज, मुझे अवसर मिला है कि मैं इस प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम में शामिल हो सकूं, एक अलग तरीके से सीख सकूं, और सेवा कर सकूं। याब्स कमेटी के साथ मिलकर कार्य करना मेरे लिए आदर की बात है जो सभी महाद्वीपों के युवाओं को जोड़ने का और दूसरों को उत्साहित करने वाले सेवा के अनुभवों को बाँटने का कार्य करती है।

यह हमारे समुदाय में आत्मा का ही कार्य है जो हमें उत्साहित करता है कि हम अपने घरों और कलीसियाओं की दीवारों से बाहर निकल कर परमेश्वर के प्रेम को ऐसे लोगों तक पहुँचा सकें जिन्हें इसकी आवश्यकता है – न सिर्फ उन्हें उत्साहित करने वाले शब्दों के द्वारा, परन्तु उदाहरणों और कार्यों के द्वारा भी।

जैसा कि मेरी कलीसिया के कुछ भाई और बहन कहते हैं – यह ''प्रार्थना–कार्य'' है – ओरासियोन/ओरासियोन – अपने समुदायों और अपनी पृष्ठभूमियों में निहित आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना करना और कदम उठाना।

ऑस्कर सुआरेज़ याब्स कमेटी के लिए लैटिन अमरीका के प्रतिनिधि हैं। वे इग्लेसिया क्रिसटियाना मेनोनिटा लबाग्य, कोलम्बिया के सदस्य हैं।

उन्होंने 21 अप्रेल को केन्या के किसुमु में रिन्यूवल 2027 – पवित्र आत्मा हमें परिवर्तित कर रहा है – में व्याख्यान दिया। यह लेख उसी व्याख्यान से लिया गया है।

इण्डोनेशिया

सामान्य से ऊपर उठते हुए इतिहास रचयिता तक

ऐन्डी ओ. सान्तोसो

क्या हम पवित्र आत्मा की बात किए बिना मिशन (सुसमाचार प्रचार सेवकाई) की बात कर सकते हैं, या मिशन की अवहेलना कर पवित्र आत्मा की बात कर सकते हैं?

मुझे स्मरण है कि जब मैंने जकार्ता में इन्टरवर्सिटी क्रिश्चन फैलोशिप में मिशन के बारे में पहली बार सीखा। मैं अपने विश्वविद्यालय के द्वितीय वर्ष में था तब मैंने रेव्ह. डॉ. मन्नापुल सागला के व्याख्यान को सुना। उन्होंने कहा, ''पवित्र आत्मा हमें इसलिए दिया गया है कि हम सेवकाई करें।''

यह छोटा सा वाक्य मेरे हृदय और मन को छू गया।

पवित्र आत्मा को मिशन से अलग नहीं किया जा सकता

''परन्तु पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे'' (प्रेरित 1:8)।

यीशु ने कहा, ''इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ, और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ'' (मत्ती 28:19–20)। महान आज्ञा स्थानीय से आरम्भ हो कर वैश्विक की ओर बढ़ती है।

यीशु मसीह के लिए गवाह बनने का अर्थ यही है। यह एक सरल आज्ञा नहीं है, परन्तु हमें पवित्र आत्मा की सामर्थ प्रदान की गई है, कि इस कार्य को पूरा करने में हमारे साथ रहे।

जब पवित्र आत्मा उण्डेला गया, प्रेरितों को गवाह बनने की सामर्थ प्रदान की गई, इसके साथ उन्हें अधिकार और आश्चर्यजनक चिन्ह दिए गए (प्रेरित 2:32)।

पवित्र आत्मा के अस्तित्व को परमेश्वर की उस गतिमान शक्ति से अलग नहीं किया जा सकता, जिससे प्रेरितों को सामर्थ मिली – और अब हमें मिलती है – कि हम यीशु के लिए गवाह बनें।

पवित्र आत्मा: गवाही देने के लिए सामर्थ

यदि हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को एक साथ आरम्भ से लेकर अन्त तक पढ़ें, तो हम यह देखेंगे कि भुला दिए गए परमेश्वर पवित्र आत्मा की व्यक्तिगत भूमिका प्रेरितों के काम की पूरी पुस्तक में प्रमुख विषय के रूप में प्रस्तुत की गई है। अर्थात्, प्रेरितों के काम पवित्र आत्मा के उस कार्य का वर्णन है जिसे उसने विश्वासियों, और आरम्भिक कलीसिया में और उनके माध्यम से किया।

पिन्तेकुस्त की घटना के बाद, सुसमाचार का सन्देश यहूदिया, सामरिया, और पृथ्वी की छोर तक फैल गया। पतरस, यहून्ना और प्रेरित सामान्य अनपढ़ लोग थे (प्रेरित 4:13)। प्रेरितों के काम में जितने चरित्रों का वर्णन पाया जाता है वे सब सामान्य लोग थे और वे यीशु की मृत्यु और पुनरूत्थान पर्व की गवाही दे रहे थे। परमेश्वर साधारण लोगों का उपयोग अपने असाधारण कार्य के लिए कर रहा है, वे परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा तैयार किए जा रहे हैं।

एक बेधड़क गवाही

मुझे स्मरण आता है जब मैं 1997 में दक्षिण सुमात्रा के लमपुंग को अपने पहले मिशन दौरे पर जा रहा था। गवाह बनने की इच्छा मुझ पर पूरी तरह से हावी थी क्योंकि उन्हीं दिनों मैंने *सुसमाचार विस्फोट* पर अपने पाठ्यक्रम को पूरा किया था।

मेरे एक मित्र और मैंने निर्णय लिया कि हम 10 दिनों के एक दौरे पर लामपुंग की कलीसियाओं का दौरा करेंगे कि वहाँ सेवकाई के बारे में सीखें और जानकारियाँ एकत्रित करें। हम परमेश्वर के कार्य के लिए अत्यंत उत्साहित थे।

हमने अनेक घण्टो तक बस से यात्रा किया, उसके बाद जहाज के द्वारा अपनी यात्रा में आगे बढ़े। जहाज में अपने दो घण्टो की यात्रा के दौरान, मैं यह प्रार्थना कर रहा था, ''प्रभु मुझे एक ऐसे व्यक्ति से मिलने का अवसर प्रदान कर जिसके साथ मैं तेरे सुसमाचार को बाँट सकूं।''

जब मैं चलते चलते प्रार्थना कर रहा था, तो मैंने देखा कि एक व्यक्ति अकेला बैठकर भोजन कर रहा था। यह मध्यरात्रि का समय था, परन्तु मैंने उससे उसके पास बैठने की अनुमति मांगी। उन्होंने मुस्कुरा कर हाँ कह कर दी। इसके बाद, मैंने एक चर्चा आरम्भ की।

मैंने पूछा, ''महाशय, मैं जानता हूँ कि आप एक पुलिस अधिकारी हैं, मैं आपसे से सिर्फ यह प्रश्न पूछना चाहता हूँ कि क्या कभी किसी व्यक्ति को आपने गोली मारी है?''

वह शान्त हो गया और उसने कहा, हाँ।

मैं यही नहीं रूक गया, परन्तु आगे उससे फिर पूछा, ''क्या अपने कर्तव्य को पूरा करते समय आपने कभी लोगों को जान से मारा है?''

उसने अचानक अपना सिर नीचे कर दिया और कहा, ''हाँ।''

मुझे – जो उस समय विश्वविद्यालय का एक छात्र ही था – इतना साहस कहाँ से मिला कि मैं एक पुलिस अधिकारी से प्रश्न करूं? यह साहस मुझे पवित्र आत्मा से प्राप्त हुआ।

पवित्र आत्मा के अस्तित्व को परमेश्वर की गतिमान शक्ति से अलग नहीं किया जा सकता, जिससे प्रेरितों को सामर्थ मिली – और अब हमें मिलती है – कि हम यीशु के लिए गवाह बनें।

उस रात, पवित्र आत्मा के अनुग्रह और उसकी सामर्थ से, मैंने इस पुलिस अधिकारी के साथ शान्ति के सुसमाचार को बाँटा। मध्यरात्रि में, उस जहाज पर, मैंने उस व्यक्ति की अगुवाई की कि वह प्रभु यीशु को ग्रहण कर ले।

जब हमारा जहाज बन्दरगाह को पहुँचा, और जब एक दूसरे से विदा लेने का समय आया, मैंने उससे एक अन्तिम अनुमति माँगी, ''क्या इस समय आपके पास पिस्तौल है?'' उसने कहा, ''हाँ'' मैंने कहा, ''क्या मैं उसे छू सकता हूँ?'' उसने कहा, ''हाँ,''

मैंने उसके कपड़े के अन्दर हाथ लगा कर देखा और पाया कि वह सच कह रहा है। मैंने कहा, ''परमेश्वर तू अद्भुत है; यह सब कुछ तेरा कार्य है और मेरा कुछ भी नहीं।''

क्या आज हम पवित्र आत्मा के साथ चलना चाहेंगे, और पवित्र आत्मा को अनुमति देंगे कि वह हमारे द्वारा बड़े बड़े कार्य करे।

ऐन्डी ओ. सोनतोसा जीकेएमआई (इण्डोनेशिया के तीन मेनोनाइट कॉंफ्रेंसों में से एक) के महासचिव हैं।

यह गवाही उनके द्वारा लिखित और बेरिटा जीकेएम (जीकेएमआई न्यूज) में मई 2016 को प्रकाशित द होली स्पिरिट एण्ड मिशन से ली गई है।

यूएसए

स्मरण रखें और सीखें

रूबेन साएर्स

पवित्र आत्मा के बारे में बात करते हुए क्या मैं कभी इस विषय के साथ न्याय कर सकता हूँ? मैं पूरे निश्चय के साथ यह मानता हूँ कि अक्सर मेरे जीवन में पवित्र आत्मा का कार्य सचमुच में हुआ है, परन्तु एक अजीब तरीके से, इसने इसे समझने की मेरी क्षमता को भी ललकारा है, इसे व्यक्त करने की बात तो छोड़ ही दें।

मैंने कलीसिया के जीवन में पवित्र आत्मा को कार्य करते हुए देखा है, जब वह उलझन में पड़े समूहों को निर्णय लेने में सक्षम बना देता है। मैंने अविश्वासी संसार में पवित्र आत्मा के कार्य देखा है, जो अविश्वास को परमेश्वर की उपस्थिति के द्वारा चकित कर देता है। मैंने निश्चय ही अपने स्वयं के जीवन में पवित्र आत्मा को कार्य करते हुए देखा है, जब वह मुझ स्वार्थी और विध्वंसक व्यक्ति को सुधारने का कार्य करता है।

पवित्र आत्मा का कार्य हमारे आत्मिक अनुभव का सबसे वर्णनातीत (वर्णन से बाहर) और सबसे आत्मपरक पहलू हो सकता है। रोमियों 8:26 ने हमेशा ही मुझे मंत्र मुग्ध किया है: ''इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते, कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए: परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भर कर जो बयान से बाहर है, हमारे लिए बिनती करता है।''

मैंने एक कलीसिया स्थापित करने वाले के रूप में इस बात का अनुभव किया है।

एक हताशाभरा मौसम

मैं एक शहरी क्षेत्र में पास्टर था। यह एक मिश्रित भावनाओं वाली गवाही है: कलीसिया आरम्भ करने का अधूरा कार्य, कलीसिया स्थापना का अधूरा कार्य, छोटी सी कलीसिया, और वह भी अक्सर अस्थिर। यहाँ कुछ बचे खुचे लोग ही रह गए थे।

यहाँ पर कार्य करते हुए, मैं पहले से अधिक निर्धन हो गया, और निश्चय ही यह निर्धनता रूमानी नहीं थी। मैं ऐसे लोगों के बीच में कार्य करने का प्रयास कर रहा था जिनकी समस्या उनका अड़यलपन था। कुछ भी ठीक नहीं चल रहा था। मुझे लगा कि पासवान की भूमिका में मुझे कम सम्मान मिल रहा है, परन्तु फिर मुझे यह लगता कि कलीसिया स्थापना करने वाले पासवान का इतना भावुक होना एक कमजोर बहाना है।

परमेश्वर के वचन का जीवित जल जिसे मैं इस संसार में उण्डलेने का प्रयास कर रहा था कोई सीमित स्त्रोत नहीं है।

मैं और अधिक भरोसा क्यों नहीं रख सकता और यह विश्वास क्यों नहीं कर सकता कि परमेश्वर यहाँ उपस्थित है और मैं जो कर रहा हूँ वह वास्तव में मायने रखता है? किसी भी सूरत में, जीवन किसी ऐसे शानदार पथ की तरह दिखाई नहीं दे रहा था जो सफलता, कल्याण, और एक प्रसन्नचित्त समाज के प्रेम और सरगर्मी की ओर ले जाए। यह जबर्दस्ती में कराए गए एक विवाह के समान लग रहा था। निश्चय ही कुछ भी वैसा नहीं था जैसा मैंने सोचा था जब मैंने एक महत्वाकांक्षी संगीत वादक के अपने पुराने जीवन से बाहर निकल कर कलीसिया स्थापना के क्षेत्र में कदम रखा था।

मुझे लगने लगा कि मैं अपने वर्षों को (माह, सप्ताह, या दिन नहीं), अपनी प्रतिज्ञा को और अपनी उर्जा को बर्बाद कर रहा हूँ। इससे भी बदतर, मुझे यह लगने लगा कि मैं जर्जर होता जा रहा हूँ और इसके पीछे कोई भी सराहनीय कारण दिखाई नहीं देता। मेरे पास बहुत कम सामर्थ और भौतिक सुख सुविधाओं की वस्तुए थीं कि मैं अपने परिवार को कुछ दे पाता।

यह मुझे दुख पहुँचाता था, और मैं बिना संकोच किए यह कहूँगा कि आज भी यह मुझे दुख पहुँचाता है!

बहुतायत का एक दर्शन

दक्षिण की गर्मी की एक शाम, मैं इसके विषय पर विचार करता हुआ – बल्कि कराहता हुआ – अपने चिपचिपे कार गैरज से निकल कर कहीं जा रहा था। मैं आधा प्रार्थना के भाव में, और आधा आत्मचिंतन के भाव में था, तभी मैंने दर्शन में एक छेद वाली बाल्टी से पानी उण्डलेती एक आकृति देखा। पानी मेरे रास्ते में आगे आगे उस छेद से सब तरफ बहता जा रहा था। मैं एक ऐसे स्थान पर आ चुका था कि मैं उदासीनता के प्रति ही उदासीन हो गया था। सब कुछ निराशाजनक और व्यर्थ प्रतीत हो रहा था, परन्तु यह मेरे लिए बहुत मायने रखता प्रतीत हो रहा था।

परमेश्वर कहाँ था? वह ''हमारे'' समय और संसाधनों को इस तरह से बर्बाद क्यों कर रहा है? उस क्षण, मैं यह विश्वास करता हूँ कि पवित्र आत्मा ने मुझ से बातें की। मैंने किसी शब्द को नहीं सुना, परन्तु मुझे जो आभास हुआ वह सच्चा प्रतीत होता था और यह मेरी बहकती कल्पनाओं का सुविधाजनक सृजन नहीं था।

मेरी शक्ति और मेरे संसाधन निश्चय ही सीमित और अपूर्ण हैं, परन्तु परमेश्वर के वचन का जीवित जल जिसे मैं इस संसार में उण्डलेने का प्रयास कर रहा था कोई सीमित स्त्रोत नहीं है। यह जर्जर नहीं हो सकता और यह वास्तव में किसी भी तरह से मेरे अधिकार के आधीन नहीं है। इस जल का स्त्रोत कभी नहीं सूख सकता। कौन जानता है कि भूमि में उण्डेला जा रहा यह जल कहाँ जा कर समाप्त होगा या इसका क्या परिणाम होगा? यह एक बड़ी कहानी का एक हिस्सा था जिसे मैं समझ सकता था या नहीं भी समझ सकता था।

मेरी परिस्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया। परन्तु, किसी तरह से, मैंने यह पाया कि चाहे परिस्थिति हताशाजनक हो, मैं परमेश्वर की शान्ति का अनुभव कर सकता हूँ। समय समय पर यह शान्ति हाथ में न आने वाली या अस्थिर हो सकती है। तौभी यह सच्ची शान्ति थी और आवश्यकता पड़ने पर स्वयं को सिद्ध कर सकती थी।

उसके बाद से मुझे परमेश्वर की उपस्थिति का यह सत्य स्वयं को स्मरण कराना पड़ता है और फिर से सीखना पड़ता है, परन्तु जब भी मैं ऐसा करता हूँ, मेरा ध्यान उस छेद वाली बाल्टी और बिखरते पानी की उस शाम की ओर चला जाता है।

यह सारे समझ से परे थी, और आज भी है।

रूबेन साएर्स रोसडाले बाइबल कॉलेज में एक शिक्षक और ग्रथपाल हैं और लंदन क्रिश्चयन फैलोशिप, लंदन, ओहियो में एक कर्जव्हेंटिव्व मेनोनाइट चर्च के सहायक पासवान हैं

सुसमाचार के लिए पके खेत

युगांडा मेनोनाइट कलीसिया बढ़ती जा रही है

ओकाथ साइमन ओनयांगा और एड ग्रॉस, यूएस युगांडा मेनोनाइट कलीसिया की एक अर्धशहरी मण्डली में एक विशेष सभा में बीमारी की चंगाई के लिए प्रार्थना करते हुए। फोटो: ओकाथ साइमन ओनयांगा

''युगांडा के खेत सुसमाचार प्रचार के लिए पक चुके हैं और कलीसिया बढ़ रही है,'' यह बात युगांडा मेनोनाइट चर्च के राष्ट्रीय संयोजक बिशप साइमन ओकोथ ने कही। मेनोनाइट वर्ल्ड कॉंफ्रेंस (एमडब्ल्यूसी) की नई सदस्य कलीसिया 2015 में 7 मण्डलियों के 310 सदस्यों की एक कलीसिया थी जो अब 2018 में बढ़ कर 18 मण्डलियों और 553 सदस्यों की कलीसिया बन गई है। मेनोनाइट चर्च युगांडा को कार्यकारिणी समिति ने 2017 में एमडब्ल्यूसी के सदस्य के रूप में स्वीकार किया था और 2015 की एमडब्ल्यूसी डायरेक्ट्री (7) में उनकी मण्डलियों की जो संख्या बताई गई थी, अब यह संख्या दोगुनी हो चुकी है।

युगांडा मेनोनाइट चर्च की मण्डलियाँ राजधानी कम्पाला के साथ साथ शहरी क्षेत्रों के आसपास बढ़ती जा रहीं हैं। केन्या मेनोनाइट चर्च के बिशप मोजेस ओटिंटो को युगांडा में कलीसियाएं स्थापित करने की प्रेरणा मिली। ओटिंटो ने युगांडा में सुसमाचार प्रचार कार्य के लिए अपना सहयोग दिया, और जॉन ओटिंटो ने 2004 में युगांडा के स्थानीय अगुवों के साथ मिल चार कलीसियाओं की स्थापना की जिन्हें 2006 में अधिकारिक रूप से पंजीकृत किया गया।

संख्या में तेजी से बढ़ती हुई इस कलीसिया की मण्डलियों के सामने बहुत सी चुनौतियाँ हैं: आराधना भवन में ढंग की छत भी नहीं है; आराधना के दौरान सदस्यों के बैठने के लिए पर्याप्त कुर्सियाँ नहीं हैं, पासवानों को उचित प्रशिक्षण नहीं मिला है, और अनेक बार उन्हें उनकी तनख्वाह भी नहीं मिल पाती।

मेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी 1979 से युगांडा में सेवाएं दे रहीं हैं, आरम्भ में एमडब्ल्यूसी के द्वारा युद्ध के दौरान पुनर्निर्माण कार्य किए गए; अब यहाँ मेल मिलाप और शान्ति स्थापना के लिए कार्य किए जा रहे हैं।

मेनोनाइट चर्च युगांडा के युवाओं ने एमडब्ल्यूसी में अपनी सेवाएं दी हैं, और एमसीसी के *यामेन* कार्यक्रम में भाग लिया है, तथा संसार के भिन्न भिन्न हिस्सों में सेवाएं देने के द्वारा वैश्विक कलीसिया के विषय में सीखा है।

लेक विक्टोरिया के उत्तरी छोर पर अग्रेंजीभाषी इस पूर्वी अफ्रीकी देश की सीमा केन्या, दक्षिण सूडान, डीआरकांगो, रूंआडा और तंजानिया से लगी हुई है। चार करोड़ युगांडावासियों में से 45 प्रतिशत प्रोटेस्टेंट मसीही हैं, 40 प्रतिशत रोमन कैथोलिक हैं, और 10 प्रतिशत से अधिक लोग मुसलमान हैं। एचआईसी/एण्ड्स से मृत्यु की ऊँची दर और बड़ी संख्या में शरणार्थियों के रूप में लोगों का भाग कर पड़ोस के देश में पलायन कर जाना युंगाडा की प्रमुख समस्याएं हैं।

''मेनोनाइट चर्च युगांडा एमडब्ल्यूसी के वैश्विक परिवार का सदस्य बन कर बहुत ही प्रसन्न है और यह हमारे लिए बड़े आदर की बात है। हमारी यह प्रार्थना है कि परमेश्वर अन्य साझेदार कलीसियाओं या व्यक्तियों को पहचानने में हमारी सहायता करेगा जो हमारे सामने आने वाली भारी भरकम समस्याओं में हमारे साथ खड़े हो सकें। परमेश्वर हम सब को सम्भाले रखे।''

– कार्ला ब्राउन

युगांडा

एमडब्ल्यूसी सदस्य:

युगांडा मेनोनाइट चर्च

बपतिस्मा प्राप्त सदस्य	553
मण्डलियाँ	18
अगुवा	ओकोथ साइमन ओन्यांगो

गैर सदस्य कलीसियाएं:

चर्च ऑफ गॉड इन ख्राइस्ट, मेनोनाइट युगांडा

सदस्य	38
मण्डलियाँ	4

देश भर में कलीसियाओं की सहभागिता

सदस्य	39
मण्डलियाँ	2

स्त्रोत: एमडब्ल्यूसी डायरेक्ट्री 2018

युगांडा मेनोनाइट चर्च की मण्डली में कुछ सदस्य फर्श पर बैठते हैं क्योंकि उनके पास पर्याप्त कुर्सिया नहीं हैं।

फोटो: ओकाथ साइमन ओनयांगा

युगांडा मेनोनाइट चर्च की एक मण्डली में आराधना के समय की तस्वीर।

फोटो: ओकाथ साइमन ओनयांगा

पूर्वी अफ्रीका में पवित्र आत्मा की क्रांति

रिन्यूवल 2027 में मगोरी क्वायर द्वारा गीत और नृत्य के द्वारा अपनी कलीसिया के इतिहास को प्रस्तुत किया गया।
फोटोः विल्हेम अंगर

हैप्पी चर्च, नाकुरा, केन्या के बिशप जोसफ कमाउ।
फोटोः लेन रेम्पल

कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उण्डेलूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे '' (प्रेरित 2:17)।

बिशप किसारे उस बड़े पेड़ के नीचे बैठे हुए थे जहाँ प्रथम मेनोनाइट मिशनरियों ने 70 वर्ष पहले अपना काम आरम्भ किया था।

मैंने उस प्रिय बिशप भाई से पूछा, ''बहुत वर्ष पूर्व उस समय यहाँ कटुरू पहाड़ी पर क्या हुआ था?''

उनके गालों पर कुछ आँसू बह कर आ गए जब उसने बोलना आरम्भ किया, ''आप उस दिन की बात कर रहे हैं जिस दिन परमेश्वर की अग्नि कटुरू पहाड़ी पर उतरी थी।

उ स दिन परमेश्वर ने मुझे स्पर्श किया और मेरे हृदय में परिवर्तन लाने वाला अपना कार्य आरम्भ किया। उस दिन से मैंने सुसमाचार के सेवक के रूप में अपनी बुलाहट को पहचानना आरम्भ किया। वह एक ऐसा दिन था जिसे मैं कभी भूल नहीं सकता।

यीशु ने मेरा स्पर्श किया और मुझे बदल दिया। लोग कटुरू पहाड़ी के दूर से निकल जाते थे क्योंकि गाँव में यह बात फैल गई थी कि जो कोई उस पहाड़ी के पास जाएगा वह जल कर भस्म हो जाएगा क्योंकि कटुरू पहाड़ी पर परमेश्वर की आग जल रही है।''

बाल सुसमाचार प्रचारक

यह 1942 की बात है। अगस्त के उस रविवार को परमेश्वर की आग कटुरू पहाड़ी के शितारी में एक नये बन रहे मेनोनाइट चर्च पर उतरी। मण्डली ने परमेश्वर की कायल कर देने वाली आग का अनुभव किया और लोग दिन भर और शाम तक पश्चताप करते हुए रोने लगे। विल्सन ओगवडा और निकानोर धाजे – शितारी प्राथमिक स्कूल के 12 वर्षीय छात्र – को प्रभु यीशु को न जानने वालों के प्रति ऐसा तरस आया कि उन्होंने स्कूल छोड़ दिया और सुसमाचार का प्रचार करने लगे।

वे प्रथम अफ्रीकी मेनोनाइट मिश्नरी बन गए और एक समुदाय से दूसरे समुदाय यात्रा कर परमेश्वर के वचन का प्रचार करने लगे। कम से कम एक बार उन्हें पीटा भी गया उसके बाद भी पूरी ताकत के साथ आगे बढ़ते रहे। वे केन्या–तन्जानिया सीमा पर प्रचार किया करते थे।

तेजी से चलने वाली जागृतिवादी बहन – स्पीडी

यह परमेश्वर का प्रबन्ध था कि रबेका किजिंजा ''स्पीडी'' ने केन्या सीमा पर अपना घर सुसमाचार के तन्जानियाई सन्देशवाहकों के लिए खोल दिया। रबेका बेधड़क प्रभु की सेवा करने के लिए प्रतिदिन सामान्य रूप से चौबीस किलोमीटर पैदल चला करती थी। इतनी तेजी से चलने के द्वारा, वे केन्याई और तन्जानियाई जागृतिवादियों के बीच सम्बन्ध जोड़ने में कामयाब हो गई।

पवित्र आत्मा की सेवकाई में एक रहस्य है। ''हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता, कि वह कहाँ से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है'' (यूहन्ना 3:8), यीशु ने कहा। ऐसा ही दक्षिण अफ्रीका जागृति सहभागिता में हुआ।

पश्चताप करने वाले शिक्षक

हम में से जो तारीखों और स्थानों के बारे में जानना चाहते हैं वे शायद जागृति का आरम्भ शायद रिवान्डा, ब्लासियो किगोज़ी के एक हाई स्कूल शिक्षक के साथ जोड़ कर देखेंगे, जिन्होंने छात्रों, कर्मचारियों, और शिक्षकों पर पवित्र आत्मा उण्डेले जाने के लिए 12 दिन तक प्रार्थना और उपवास किया।

ब्लासियो अपने कक्ष से एक परिवर्तित व्यक्ति के रूप में बाहर आए, सबसे पहले उन्होंने अपनी पत्नी से क्षमा मांगा और फिर सभी शिक्षकों और कर्मचारियों की एक बैठक बुलाई और यह घोषणा की कि प्रभु ने पश्चताप की आवश्यकता को उन पर प्रगट किया है। स्कूल के सारे लोगों ने अपने पापों को मान लिया। कमपाला के एंगलिकन बिशप ने ब्लासियो को आंमत्रित किया कि बिशपों के साथ मुलाकात करें, मुलाकात के बाद उन्होंने ने भी मन फिराव की एक गहरी आवश्यकता महसूस की। छह सप्ताह बाद ब्लासियो बीमार पड़ गए और उनकी मृत्यु हो गई। परन्तु पूर्वी अफ्रीका में उनके द्वारा प्रचार किए गए सन्देश का अन्त कभी नहीं हुआ।

जागृति का फल

जब पवित्र आत्मा की कायल करने वाली सामर्थ सक्रिय हुई तो मेनोनाइट लोग इससे अछूते नहीं रहे।

यीशु से और एक दूसरे से प्रेम रखने वाले लोगों के रूप

एक मेनोनाइट समूह की अठ्ठारह मसाई बहनें रिन्यूवल 2027 में भाग लेने और एक पराम्परिक नृत्यु प्रस्तुत करने के लिए रात के समय जमीन पर ही सोने को तैयार हो गईं। फोटो: विल्हेम अंगर

में जागृति आगे बढ़ती रही। इससे पहले, अगुवों ने जागृति को कायम रखने पर ध्यान दिया। विभिन्न तरीकों से, पूर्वी अफ्रीका के सभी देश उस जागृति से प्रभावित हुए जो आज तक कायम है।

1. जागृति का केन्द्र यीशु मसीह है। सहभागिता की नियमित सभाओं को भी केन्द्र यीशु मसीह है। प्रत्येक व्यक्ति यह जान गया कि जागृति के लिए कार्य करने वाले सेवक यीशु मसीह से प्रेम रखते हैं। चाहे हजारों की संख्या में या बिल्कुल थोड़े, जागृति के लिए कार्य करने वाले लोग यीशु के नाम से मिलते हैं और वहाँ यीशु विश्वासियों की सहभागिता में उनसे मुलाकात करता है।
2. पाप अंगीकार, मन फिराव, और यीशु की ज्योति में चलने को सबसे अधिक महत्व दिया जाता है। प्रत्येक सभा में पाप का अंगीकार किया जाता है और यीशु मसीह के लोहू से शुद्ध किए जाने का आनन्द मनाया जाता है। 1 यूहन्ना 1:7 में जागृति की सहभागिता के प्रमुख कर्तव्यों का सार दिया गया है: ''पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं; और उसके पुत्र यीशु मसीह का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।''
3. जागृति के लिए बोझ रखने वाले जोश के साथ सेवकाई करते हैं। उन्हें यीशु के लिए जलन के साथ प्रज्जविलित लोगों – बलोकोले के रूप में जाना जाता है।
4. सहभागिताएं आनन्द का समुदाय हैं। इन सहभागिताओं में सम्पूर्ण पूर्व अफ्रीका के गोत्रों और जातियों के लोग शामिल हैं, जो प्रेरित 2:5–6 की कलीसिया का एक चित्र है: ''और आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त यहूदी यरूशलेम में रहते थे। जब वह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था, कि ये मेरी भाषा में बोल रहे हैं।''

यह आंदोलन पूर्वी अफ्रीका में सबसे सच्चा अन्तरजातीय समुदाय बन गया। अन्तरसमुदायिक सम्बन्धों की उनकी भावना केन्या में राजनैतिक विवादों का समाधान करने के लिए बढ़ावा देने के शान्तिपूर्ण प्रयासों में एक महत्वपूर्ण विकास थी। उन्होंने परामर्श देने और परामर्श प्राप्त करने के सिद्धान्तों को भी रूप दिया।

जागृति मेलमिलाप लाती है

बोलाकोले के छोटे छोटे दल समय समय पर दक्षिण अफ्रीका जाया करते थे और शान्तिपूर्ण राजनैतिक समाधान के लिए आग्रह किया करते थे। यह सचमुच में अद्भुत है कि किस प्रकार से छात्रों से आरम्भ हुई इस जागृति ने बड़ा आकार लेते हुए शान्ति के मार्ग में सबसे कठिन चुनौतियों के मध्य भी मेलमिलाप के लिए पहल किया।

जैसे जैसे सहभागिता बढ़ती गई, संयुक्त राज्य अमरीका सहित पश्चिम के अनेक देशों के लोगों को सहभागिता के लोगों के द्वारा प्रचार किए गए मसीह के अनुग्रह ने गहराई से स्पर्श किया। 1930 और 40 के दशक में मेनोनाइट लोगों द्वारा नियमवाद को बहुत बढ़ावा दिया जाता था जो कि अत्यंत विंध्वसक सिद्ध हुआ; पूर्वी अफ्रीका के मेनोनाइट लोगों के द्वारा दिया गया अनुग्रह से भरा संदेश जीवनदायी सिद्ध हुआ। जागृति लाने का बोझ रखने वालों की सहभागिता उत्तर अमरीका के अनेक समुदायों में फैल गई, और बहुतों के लिए उत्साह और नया जीवन लेकर आई।

मेम्ने के लोग

पूर्वी अफ्रीका जागृति सहभागिता ने एक डिनोमिनेशन का रूप लेने से मना कर दिया। वे पहले से स्थापित अपनी अपनी कलीसियाओं में ही बने रहे। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि जागृति का बोझ रखने वाले इन लोगों की कोई पहचान नहीं है।

पूर्वी अफ्रीका के क्षेत्र में राजनैतिक उथलपुथल के मध्य, बलोकोले लोगों को शान्ति के लोगों के रूप में पहचाना जाता था। उन्हें मेम्ने के लोग कहा जाता था, ऐसे लोग जो यीशु मसीह के प्रति अपने समर्पण के लिए अपना प्राण तक दे देते हैं।

केन्या और युगान्डा में, और साथ ही साथ बुरूंडी और रूआण्डा में चले आंदोलन के बिल्कुल आरम्भ में, जनजातीय या अन्तर्जातीय विवाद के कारण उपद्रव हुए। जागृति का बोझ रखने वालों ने इन हिंसक संघर्षों में शामिल होने से मना कर दिया। सैकड़ों लोगों ने इस गवाही के लिए अपना प्राण दे दिया कि यीशु ही परमेश्वर का मेम्ना है।

केन्या की स्वतंत्रता के बाद के उथल पुथल भरे इतिहास में अनेक बार, मेनोनाइट लोग मेम्ने के लोगों के साथ बेधड़क हो कर खड़े रहे हैं, और उन्होंने इस बात को बुलन्द किया है कि वे राष्ट्रों की चंगाई के लिए समर्पित हैं, राष्ट्रों के नाश के लिए नहीं।

डेविड डब्ल्यू. शेंक एक अर्न्तराष्ट्रीय प्रचारक हैं जो हमारे अनेकता से भरे इस संसार में मसीह की विश्वासयोग्यता से गवाही देने के लिए समर्पित हैं, जिसके लिए वे सौ से भी अधिक देशों और स्थानों की यात्रा कर चुके हैं।

डेविड एक लेखक, मिशनरी, शिक्षक, प्रचारक, और अगुवा हैं, जो अपनी पत्नी ग्रेस के साथ मिलकर मुसलमानों के साथ मेलमिलाप के लिए विशेष रूप से सेवकाई करते हैं। उनका जन्म पूर्वी अफ्रीका में हुआ और वे माउंटविले मेनोनाइट चर्च इन पेन्सिलवेनिया, यूएसए के सदस्य हैं। केन्या के किसुम में, 21 अप्रेल को आयोजित रिन्यूवल 2021 – आत्मा हमें परिवर्तित कर रहा है – के अवसर पर वचन से प्रचार किया। यह लेख उनके इसी सन्देश से लिया गया है।

एमडब्ल्यूसी की पुस्तकें

ग्लोबल ऐनाबैपटिस्ट मेनोनाइट शेल्फ ऑफ लिटरेचर के लिए कुछ पुस्तकों का नयी भाषाओं में अनुवाद किया गया है: ये पुस्तकें सदस्य कलीसियाओं की सहायता करेंगी कि एक जैसे मसीही विश्वास को बढ़ावा दे सके।

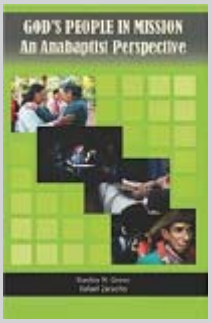

***गॉड्स पीपल इन मिशन* (मिशन में परमेश्वर के लोग): एक ऐनाबैपटिस्ट दृष्टिकोण, सम्पादन स्टेनली डब्ल्यू. ग्रीन और राफेल ज़राखो, एमडबल्यूसी मिशन कमीशन**

लेखक: न्ज़ाश लुमिया, अन्टोनिया गोन्साल्वेज, पेतरूस एको हंडोयो, विक्टर पेड्रोजा क्रूज, म्ववाला सी केटशिन्गा, जेनी ब्लॉ और जेम्स आर क्रेबिल, डेविड डब्ल्यूसी शेंक, सीज़र गार्सिया

भाषाएं: अंग्रेजी, स्पेनिश, फ्रेंच। अमेजोन किन्डल में उपलब्ध

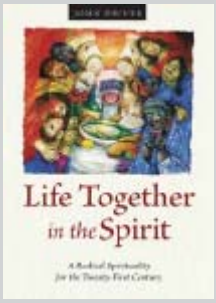

***लाइफ टूगेदर इन द स्पिरिट* (आत्मा में एक साथ जीवन): इक्कीसवी शताब्दी के लिए एक क्राँतिकारी आत्मिकता, लेखक जॉन ड्राइवर।**

ग्लोबल ऐनाबैपटिस्ट चर्च परिशिष्ट से प्रत्युत्तर: म्ववाला सी केटशिंगा, क्रिस्टिना आर्शीवाद्म, राफेल जाराखो, हेरमान्न वोयल्के, छिआय-लैंग ''पउलुस'' पान, पैट्रिशिया उरूएना बारबोसा, नेल्ली मलोत्श्वा

भाषाएं: अंग्रेजी, स्पेनिश, इण्डोनेशियाई, पुर्तगाली, कोरियाई

ऑनलाईन उपलब्ध: **www.archive.org/details/instituteforthestudyofglobalanabaptismgoshen** (अंग्रेजी, फ्रेंच, इण्डोनशियाई भाषा में उपलब्ध)

www.plough.com (अंग्रेजी और कोरियाई भाषा में उपलब्ध)

गाड्स शालोम प्रोजेक्ट (परमेश्वर की शान्ति परियोजना), लेखक बेर्नहाट्ड ओट्ट

भाषा: अंग्रेजी, स्पेनिश

(फ्रेंच और जर्मन, और जापानी में शीघ्र आ रही है)

मेनोनाइट विश्व सम्मेलन की तिथियाँ

इण्डोनेशिया 2021

होली स्टेडियम (मेनोनाइट चर्च)

सेमारंग, इण्डोनेशिया

सम्मेलन तिथि: 6–11 जुलाई 2021

ग्लोबल यूथ समिट (जीवाएएस): 2–5 जुलाई 2021

- *फालोइंग जीज़स टूगेदर अक्रॉस बैरियर्स*
- यीशु के पीछे एक दूसरे के साथ मिलकर रूकावटों के पार चलते चलें

पवित्र आत्मा हमें परिवर्तित कर रहा है

''मैंने परमेश्वर के आत्मा को भारत में कार्य करते हुए देखा है, यह सताव के बाद भी लोगों के जीवन में परिवर्तन ला रहा है। परमेश्वर का आत्मा ऐसे लोगों के हृदयों को स्पर्श कर रहा है जो मसीह से अलग हैं और उनके जीवन में अद्भुत रीति से परिवर्तन आया है। हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं क्योंकि आत्मा कार्य कर रहा है। 2000 वर्ष पूर्व जो कुछ हुआ था, वह आज भी हो रहा है। प्रभु जीवित है और संसार में बड़े बड़े काम कर रहा है।''

– बिजोय राऊल, ब्रदरन इन ख्राइस्ट चर्च, ओड़िसा, भारत।

''पवित्र आत्मा के द्वारा परिवर्तित किया जाना वह प्रमुख लक्ष्य है जिसे मैं अपनी कलीसिया के लिए चाहता हूँ। यह आवश्यक है कि पवित्र आत्मा कलीसिया की अगुवाई करे। प्रभु की प्रजा के रूप में, यह आवश्यक है कि हम इस तरह से परिवर्तित हो सकें कि परमेश्वर को सचमुच में भाएं।''

– जीन क्लॉडे अम्बेके इलोंगा, इग्रेजा इव्हाजिलिका डोस इरामाओस मेनोनिटास एम अंगोला।

विश्व सहभागिता रविवार की आराधना के लिए मार्गदर्शिका

विश्व सहभागिता रविवार एक अवसर होता है जब हम विश्वास के अपने समुदाय को यह स्मरण करने एक अवसर प्रदान करते हैं कि हम सब एक देह के अंग जो अनेक जातियों, अनेक भाषाओं, और अनेक राष्ट्रों से मिलकर बने हैं (प्रकाशितवाक्य 7:9)। प्रत्येक वर्ष, हम संसार भर की ऐनाबैपटिस्ट सम्बन्धित कलीसियाओं को प्रोत्साहित करते हैं कि एमडब्ल्यूसी द्वारा दिए गए मूलविषय पर ध्यान केन्द्रित करते हुए 21 जनवरी के सबसे पास वाले रविवार की आराधना को विश्व सहभागिता रविवार के रूप में मनाएं। इस दिन 1525 को, स्विट्ज़रलैण्ड के ज्यूरिख में पहला बपतिस्मा हुआ था। हम इस दिन, इस बात का उत्सव मनाते हैं कि मसीह में और पवित्र आत्मा की सामर्थ से, हमें अलग अलग करने वाली सांस्कृतिक और राष्ट्रीय सीमाएं क्रूस के द्वारा जीत ली गई हैं।

2019 के लिए लैटिन अमरीका की कलीसियाओं के द्वारा **''पथिकों के साथ न्याय का व्यवहारः पलायन और ऐनाबैपटिस्ट–मेनोनाइट इतिहास''** मूलविषय पर आराधना के लिए मार्गदर्शिका तैयार की गई है, और यह मूलविषय निम्नलिखित स्थलों पर आधारित हैः लैव्यव्यवस्था 19:33–34; लूका 4:18–21; 1 पतरस 2:11–22। लगभग 500 वर्ष पूर्व, ऐनाबैपटिस्ट लोगों को इसलिए सताया गया क्योंकि वे दावा करते थे कि वे मूलतः परमेश्वर के राज्य के नागरिक हैं। कुछ ही समय पूर्व लैटिन अमरीका और कैरेबियाई देशों में ऐनाबैपटिस्ट लोगों ने अपनी उपस्थिति के 100 वर्ष पूर्ण करने के अवसर पर उत्सव मनाया।

लैटिन अमरीका इन दिनों एक विकराल विस्थापन संकट से गुजर रहा है, यहाँ व्याप्त पूर्वनियोजित अपराध, हिंसा और गरीबी ने हजारों की संख्या में लोगों को बाध्य कर दिया है कि वे अपने अपने घरों को छोड़ कर भाग जाएं। पलायन करने वाले लोग, जिनमें ऐनाबैपटिस्ट भी शामिल हैं, सुरक्षा की तलाश में बहुत ही कठिन परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं। जोखिम में पड़े इन लोगों के बीच पहुँच कर हमारी कलीसियाएं इनकी सुधि ले रहीं हैं। ऐनाबैपटिस्ट मसीहियों के सामने वर्तमान में यह बुलाहट है कि वे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा की जा रही न्याय करने की सेवकाई में उसका अनुसरण करें। इस सेवकाई में पलायन कर आए लोगों को स्वीकार करना भी शामिल है। लैटिन अमरीका में, ऐनाबैपटिस्ट कलीसियाएं दोनों प्रकार के लोगों से मिलकर बनी हैं, यहाँ ऐसे लोग भी हैं जो पलायन कर आएं हैं और ऐसे लोग भी जो पलायन कर आए हुए लोगों को स्वीकार करते हैं। न विस्थापित हो जाना सरल है, और न ही विस्थापित परदेशियों को स्वीकार करना। उखाड़े जाने (बेघर किए जाने) और परिवर्तन की इन घटनाओं के मध्य परमेश्वर विश्वासयोग्य बना हुआ है। इस मार्गदर्शिका को डाऊनलोड कर अपनी स्थानीय मण्डली में, विश्वव्यापी ऐनाबैपटिस्ट परिवार के साथ एक आत्मा में होकर, जनवरी में या 2019 में किसी भी समय अपनी सुविधा के अनुसार विश्व सहभागिता रविवार अवश्य मनाएं। हिन्दी में भी मार्गदर्शिका उपलब्ध हैं। अपने कॉंफ्रेंस अगुवे के माध्यम से एमडब्ल्यूसी क्षेत्रीय प्रतिनिधि से सम्पर्क कर इसे प्राप्त किया जा सकता है। अपनी मण्डली में विश्व सहभागिता रविवार मना कर इसकी तस्वीरें और रिपोर्ट आप इस इमेल पते पर या कॉंफ्रेंस कार्यालय को भेजें **photos@mcw-cmm.org. www.mwc-cmm.org/wfs**

रिन्यूवल 2027 के लिए प्रार्थना करें

6 अप्रेल 2019

रिन्यूवल 2027 ऐसे आयोजनों की दस वर्षों तक चलने वाली एक श्रृंखला है जो ऐनाबैपटिस्ट आंदोलन के आरम्भ होने की 500वीं वर्षगाँठ का उत्सव मनाने लिए आयोजित किए जा रहे हैं। पथिकों के साथ न्याय का व्यवहारः पलायन और ऐनाबैपटिस्ट इतिहास, मूलविषय पर ध्यान केन्द्रित करते हुए, रिन्यूवल 2027 का आयोजन कोस्टारिका में कार्यकारिणी बैठकों के साथ साथ 2019 में किया जाएगा। जबकि रिन्यूवल 2027 में स्थानीय और अन्तर्राष्ट्रीय अतिथि भाग लेंगे, प्रार्थना करें कि यह एकीकृत आराधना का एक आनन्दमय समय सिद्ध हो।

इसी समय जब कार्यकारिणी समिति भी अपनी बैठकों में विभिन्न निर्णयों को लेती है, परमेश्वर से बुद्धि और अनुग्रह के लिए प्रार्थना करें।

पवित्र आत्मा हमें परिवर्तित कर रहा है

''रोमियों 12:1–2। आत्मा, जो परमेश्वर का श्वास है, ही हमें एक करता है, हमें बदलता है, और हमारी भिन्नताओं के

बाद भी हमें साथ लाता है। हम सब को परिवर्तित होने की आवश्यकता है, . . . यह आवश्यक है कि मैं परमेश्वर के आत्मा को सुनूँ ताकि वह मेरी सहायता करना जारी रखे जिससे कि मैं अपनी असुरक्षाओं, अपने पूर्वाग्रहों के पार जा कर देख सकूं, और यह समझ सकूं कि किस प्रकार से परमेश्वर हमें एक साथ मिलकर अपना कार्य पूरा करवाता है।''

– ग्लेन गुयटन, मेनोनाइट चर्च, यूएसए

एमडब्ल्यूसी का सहयोग करें

आपकी प्रार्थनाओं और आर्थिक योगदान के प्रति हम अत्यंत आभारी रहेंगे। आपका योगदान हमारे लिए महत्वपूर्ण है। इसकी सहायता सेः

- हम विश्व भर में अपने विश्वास के घराने को पोषित करने के लिए अपनी संचार नीतियों को रूप दे सकेंगे और उनका विस्तार कर सकेंगे।
- विश्व सहभागिता रविवार की आराधना के लिए सहायक सामग्रियाँअपनी विविध पृष्ठभूमि में ऐनाबैपटिस्ट मसीहियों के रूप में अपनी सहभागिता की पहचान और गवाही को दृढ़ कर सकेंगे।
- नेटवर्कों और सम्मेलनों के माध्यम से समुदाय को मजबूती दे सकेंगे ताकि हम एक दूसरे से सीख सकें और एक दूसरे का सहयोग कर सकें।

प्रार्थना निवेदनों के लिए www.mwc-cmm.org में जाकर ''गेट इन्वाल्वड्'' टेब पर क्लिक करें, और विभिन्न तरीकों से ऑनलाइन भेंट देने के लिए ''डोनेट'' टेब पर क्लिक करें। या अपनी भेंट मेनोनाइट वर्ल्ड कॉंफ्रेंस में इस पते पर भेजें:

- P.O Box 5364,
  Lancaster, PA 17808 USA
- 50 Kent Avenue,
  Kitchener, ON N2G 3RI CANADA
- Calle 28A No. 16-41
  Piso 2, Bagota, Colombia

एक मददगार स्थान: जनरल काउँसिल सम्बन्धों को विकसित व प्रोत्साहित करती है

जनरल काँसिल के प्रतिनिधि नारंगी कार्ड दिखा कर अपनी सहमति प्रगट करते हुए। फोटो: लेन रेम्पल

'यदि आप सेवकाई से थके और बोझ से दबे हुए हैं, तो अपने अपने स्थान पर खड़े हो जाएं।'' मेनोनाइट वर्ल्ड कॉंफ्रेंस (एमडब्ल्यूसी) के जनरल काँसिल की सभाओं के दौरान जैसे ही संध्याकालीन मनन के समय डीकन्स कमीशन ने प्रार्थना निवेदन का यह आमंत्रण दिया, पुर्तगाली भाषा बोलने वाले देशों के एक पासवान आगे बढ़ कर एक अंगोलियाई पासवान के पास पहुँच गए जो इस आव्हान को सुन कर अपने स्थान पर खड़े हुए थे। पूरे कक्ष में प्रतिनिधियों के झुण्डों ने अगुवों को घेर लिया और प्रोत्साहित करने वाली प्रार्थना करते हुए उनके बोझ को हल्का करने में जुट गए।

अलग अलग महाद्वीपों में फैले ऐनाबैपटिस्ट परिवार को एक साथ मिलाए रखने के लिए, अधिकांश समय, एमडब्ल्यूसी के द्वारा स्थान या मंच तैयार करने का कार्य वास्तव में सोशल मीडिया या ईमेल द्वारा ही किया जाता है, परन्तु प्रत्येक तीन वर्ष में एक बार, जनरल काउँसिल (प्रत्येक कॉंफ्रेंस से एक से लेकर तीन प्रतिनिधि), कमीशनों, और नेटवर्कों (ग्लोबल मिशन फैलोशिप, ग्लोबल ऐनाबैपटिस्ट सर्विस नेटवर्क) की सभाओं के रूप में आमने सामने मुलाकात का सुअवसर दिया जाता है। केन्या के लिमुरू में 23 से 26 अप्रेल 2018 तक 58 देशों के 107 राष्ट्रीय कॉंफेंसों के प्रतिनिधि एकत्रित हुए। उन्होंने विभिन्न विषयों पर सूझबूझ के साथ अनेक निर्णय लिए, ऐनाबैपटिस्ट शिक्षाओं को सीखा – मिलकर भोजन किया और अपने अपने हृदय की भावनाओं को व्यक्त किया।

जनरल काउँसिल की सभाएं ''रिश्ते बनाने, केन्या, और अफ्रीका, इण्डोनेशिया, जापान, चीन के सभी भागों, और विश्व के अनेक भागों से आए भले भाई बहनों से मुलाकात करने'' से सम्बन्धित हैं। यह बात कान्वेसिओन डे लास इग्लेसियास मेनोनिटास डे पुइरेटो, रिको के जुआन सी. कोलन ने कहा। वे आगे कहते हैं, ''उनसे सीखना, यह देखना कि वे किस प्रकार से प्रार्थना करते हैं, और उनके दीन व्यवहार को सीखना . . .– यह मेरे लिए अत्यंत फलदायी अनुभव था।''

कम्युनाटे मेनोनानिटा अउ कॉंगों के अल्फान्सोज़ कोमुएसा कहते हैं, ''हमने यह जाना कि न सिर्फ कॉंगों में ऐसी समस्याएं हैं जो कलीसियाई जीवन पर असर डालती हैं, बल्कि समस्याएं प्रत्येक स्थान पर हैं, परन्तु प्रत्येक स्थान की समस्याएं अलग अलग हैं। मैं पनामा की कलीसिया के कष्टों के बारे में जानकर अत्यंत व्याकुल हो गया, इन भाई बहनों को उनकी ही भूमि से बेदखल कर दिया है। यह सच्चाई, कि हम एक साथ मिलकर इन अनुभवों को बाँटते हैं, हमें अवसर देती है कि हम एक दूसरे को ढाढ़स प्रदान करें।''

कोलोन कहते हैं, ''यह एक ऐसा स्थान है जहाँ हम एक दूसरे से बातचीत करते हैं और एक दूसरे से परिचित होते हैं।''

एक दूसरे के सामने प्रार्थना निवेदन रखने का एक स्थान

प्रार्थना के लिए ठहराए गए समय में कोमुएसा ने डीआर कॉंगों की समस्याओं को सबके सामने रखा, जहाँ एक हिंसक सशस्त्र बल ने मेनोनाइट चर्च के अनेक सदस्यों को उनके घरों से बेदखल कर दिया है, जिसके परिणामस्वरूप अनेक लोगों की मृत्यु हो रही है, परिवार बिछड़ रहे हैं, और गरीबी बढ़ती जा रही है।

जर्मनी के अर्बियेट्सगेम इन शाट मेनोनिट्सशेर ब्रुडरगेमेइन्डेन इन ड्यूट्श्चलैण्ड के अलेक्जेंडर न्यूफेल्ड कहते हैं कि मध्य पूर्व के अनेक शरणार्थी जर्मनी देश में नया घर बना रहे हैं, यह कलीसिया के सामने सीखने और बढ़ने की चुनौती रखता है।

निकारागुआ के प्रतिनिधियों ने सभाओं के दौरान छात्रों के नेतृत्व में हो रहे विरोध को कुचलने के सरकार के कदम के विषय पर अपनी चिन्ता प्रगट की।

नेपाल बीआईसी चर्च/ब्रदरन इन कम्युनिटी वेलफेयर सोसाइटी की हन्ना सोरेन ने बताया कि 1000 सदस्यों वाले नेपाल के एक कॉंफ्रेंस ने पिछले कुछ वर्षों से बाढ़ और भकम्प के कारण बहुत हानि झेला है, साथ ही धर्मांतरण विरोधी कानूनों ये बन्धी हुई है, तौभी यह लगातार बढ़ती जा रही है।

जनरल कॉंऊसिल बैठक 2018 में कमीशन के दस्तावेजों का अनुमोदन

मूलनिवासियों के साथ साथ अपनेपन का भाव

मसीही पवित्रशास्त्र में हमारा सामना एक ऐसे यहोवा से होता है जो विस्थापितों और कष्ट में पड़े लोगों की पुकार को सुनता है, उनकी भलाई की गहन चिन्ता करता है, और उन्हें बचाने के लिए कदम उठाता है।. . . विश्व भर के आदिवासी लोगों की पुकार का उत्तर देने में एमडब्ल्यूसी प्रभु यीशु मसीह का अनुसरण करना चाहता है। इस कदम में न सिर्फ अन्याय का सामना कर रहे लोगों की सुधि लेना शामिल है, परन्तु उन्हें अत्याचार के ढाँचों व व्यवस्था से मुक्त करना भी शामिल है (कुलु. 2:15), ताकि परमेश्वर के सारे लोग और उसकी सृष्टि भजन संहिता में दी गई इस आशा का अनुभव कर सकें कि करुणा और सच्चाई आपस में मिल गई हैं; धर्म और मेल ने आपस में चुम्बन किया है (भजन 85:10)।

mwc-cmm.org/solidarity-indigenous-people

पहचान और सार्वभौमिकता: अन्तरकलीसियाई पहुनाई और कलीसिया सम्प्रदाय की पहचान पर एक धर्मविज्ञान

मसीही कलीसिया के अनेक डिनोमिनेशनों और परम्पराओं के रूप में विभाजन पर विलाप किया जा सकता है। परन्तु 2000 वर्ष बाद की यह वास्तविकता वास्तव में उतनी बुरी दशा में नहीं है यदि हम प्रभु के द्वारा मसीही एकता के लिए यूहन्ना 17 में की गई प्रार्थना को स्मरण रखते हैं।

कलीसियाओं और डिनोमिनेशनों को एक दूसरे से अलग थलग हो कर नहीं रहना चाहिए। हमें एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे को स्वीकार करते हुए रहना चाहिए और एक दूसरे के साथ चर्चा करते रहना चाहिए।

परमेश्वर के घर में हमें विविधताओं के मध्य मेलमिलाप के साथ रहना चाहिए। अपनी कलीसिया की विरासत, परम्परा, और योगदानों के दावों को साहसपूर्वक आगे रखना चाहिए, वहीं अपनी सीमित समझ को स्वीकार करने की दीनता भी रखना चाहिए।

mwc-cmm.org/identity-ecumenicity

सीखने का एक स्थान

प्रतिनिधि मेघधनुष के रंगों वाले तम्बू/पण्डाल के नीचे एकत्रित होते थे, इस प्रकार का तम्बू न सिर्फ विविधता का प्रतीक था, परन्तु परमेश्वर के लोगों के लिए एक पवित्रस्थान भी। यहाँ एक साथ मिलकर प्रतिनिधिगणों ने 2018–2021 की योजनाओं और आर्थिक बजट का अनुमोदन किया, 2016 –2021 के फेयर शेयर का पुनरावलोकन किया, और कमीशनों के प्रस्तावों पर जीवन्त चर्चाओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया। अगले तीन वर्षों के लिए नीतिगत लक्ष्य: ऐनाबैपटिस्ट पहचान के अनुरूप जीवन व्यतीत करना, एक दूसरे पर निर्भर सम्बन्ध, मेलमिलाप और आशा।

बाइबल के एक विद्वान और फेथ एण्ड लाइफ कमीशन के नए सभापति थॉमस योडर न्यूफेल्ड ने कहा ''आत्मा की एकता के कारण हम एक साथ चलते हैं, एक साथ अच्छे से चलने के

कारण नहीं।'' न्यूफेल्ड ने तीन शिक्षात्मक सत्रों में वक्ता के रूप में सेवकाई भी दी।

उन्होंने यह भी कहा, ''हमारी एकता में विविधता के लिए परमेश्वर पर दोष लगाया जाना चाहिए। यह एक स्थायी समस्या है जिसके लिए हम नहीं चाहेंगे कि परमेश्वर इसका समाधान करे।''

उन्होंने आगे कहा, ''सीमाओं को तोड़ने का रूपक यह दर्शाता है कि शान्ति कितनी बहुमूल्य है।''

जूझने का एक स्थान

प्रतिनिधियों ने पीड़ा का अनुभव किया जब विवादास्पद विषयों पर प्रतिक्रिया देने के लिए फेथ एण्ड लाइफ कमीशन के द्वारा प्रस्तुत मार्गदर्शिका को लेकर असहमतियाँ उभर आईं।

योडर न्यूफेल्ड की शिक्षा – धीरज, कष्ट सहना, क्षमा, एक दूसरे में परमेश्वर के मुख को देख पाना एकता में चलने के उपाय हैं – कसौटी पर कसी गई। जनरल काउँसिल इस सहमति पर नहीं पहुँच पाई कि इस प्रस्ताव को स्वीकार किया जाए जिसका अर्थ यह है कि एमडब्ल्यूसी के पास अब भी एक स्पष्ट प्रक्रिया नहीं है कि किस प्रकार से विवादास्पद मुद्दों पर चर्चा की जाए।

कमीशन के इन दो अन्य दस्तावेजों का प्रतिनिधियों के द्वारा अनुमोदन कर दिया गया: मूल निवासियों के साथ एकात्मता पर एक वक्तव्य और एक शिक्षण सामग्री ''आइडेन्टिटी एण्ड इक्यूमेनिसिटी: ए थियोलॉजी ऑफ इन्टरचर्च हास्पिटेलिटी एण्ड डिनोमिनेशनल आइडेन्टिटी।''

पिछले जनरल कॉंसिल के बाद से कार्यकारिणी समिति द्वारा अनुमोदित किए गए नए कॉंफ्रेंसों और 2018 के नए सदस्यों के नामों पर प्रतिनिधियों ने मुहर लगाई: लेकान्सटर मेनोनाइट कॉंफ्रेंस (पूर्ण सदस्य के रूप में); और इग्लेसिया मिसियोनेरा, बोलिविया (एसोसिएट सदस्य के रूप में) स्वीकार कर लिया गया।

हेन्क स्टेनवर्स को एमडब्ल्यूसी का नया अध्यक्ष चुन लिया गया जो 6–11 जुलाई 2021 तक इण्डोनेशिया में आयोजित मेनोनाइट विश्व सम्मेलन में अपना पदभार ग्रहण करेंगे। वर्तमान में सेवारत उपाध्यक्ष रबेका ओसिरो ने इस बात को दृढ़ किया कि वे छह वर्षीय कार्यकाल तक सेवा करेंगी।

कमीशनों के नए सदस्यों और कार्यकारिणी समिति के सदस्यों का अनुमोदन किया गया (चार्ट देखें)।

जनरल काउँसिल से पहले, ऐनाबैपटिस्ट सर्विस और मिशन एजेन्सियों के प्रतिनिधियों और नुमाइंदों ने रिन्यूवल 2027 में भाग लेने के लिए दक्षिण केन्या की यात्रा की, यह दिन भर का कार्यक्रम था जो ऐनाबैपटिस्ट कलीसिया के लगभग 500 वर्ष के इतिहास और जीवन में पवित्र आत्मा की भूमिका से सम्बन्धित उत्सव था (''आत्मा में आनन्द'' देखें)। अगले दिन, उन्होंने किसुमु क्षेत्र की स्थानीय मण्डलियों में आराधना किया।

ओसिरो ने कहा कि विश्व भर के ऐनाबैपटिस्ट अगुवों के सम्मेलन की पहुनाई करना केन्या मेनोनाइट कलीसिया के लिए बड़े आदर का विषय है। ''हम अत्यंत उत्साहित और दृढ़ महसूस कर रहे हैं कि हम इस आयोजन को साकार कर पा रहे हैं।'' उन्होंने यह भी कहा, ''यदि इस दौरान आपको कोई कष्ट हो . . . तो कृपया हमें क्षमा करें, क्या ही मनोहर और भली बात हैं कि हम साथ मिलकर एकता में बने रहते हैं।''

– मेनोनाइट वर्ल्ड कॉंफ्रेंस की एक विज्ञप्ति

फेथ एण्ड लाइफ कमीशन के सदस्यों का परिचय

(बाएं से दाएं) लीडिया एडी, एन्टोनियो गोन्साल्वेज, मंजुला राऊल, रबेका गोन्साल्वेज, जॉन डी. रोथ, तेवुड्रोस बेयने, थॉमस आर योडर न्यूफेल्ड, नजूजी मुकावा

फेथ एण्ड लाइफ कमीशन एमडब्ल्यूसी की सदस्य कलीसियाओं की सहायता करती है कि कलीसियाएं मसीही विश्वास और व्यवहार तथा वर्तमान संसार में ऐनाबैपटिस्ट मेनोनाइट गवाही के विषय पर मार्गदर्शन और शिक्षाओं का आदान प्रदान कर सके। यह कमीशन एमडब्ल्यूसी की सदस्य कलीसियाओं को उत्साहित करती है कि कलीसियाएं स्थानीय, अन्तर्राष्ट्रीय,और अन्तर्सांस्कृतिक स्तर पर अपने विश्वास और अपनी धारणाओं के सम्बन्ध में परस्पर जवाबदेही के रिश्ते विकसित करें।

फेथ एण्ड लाइफ कमीशन की गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं:

1. **अन्तर्कलीसियाई/इक्यूमैनिकल वार्तालाप को बढ़ावा देना:** एमडब्ल्यूसी मसीह की देह के अन्य अंगों की समझ को गहराई प्रदान करने में सहायता करने को प्रतिबद्ध है। हमारा यह कमीशन एमडब्ल्यूसी अर्न्तकलीसियाई वार्तालाप को सम्भालता है और इन वार्तालापों के आधार पर तैयार किए गए दस्तावेजों पर चर्चा करने के लिए बढ़ावा देता है।
2. **एमडब्ल्यूसी के लिए शिक्षण साधनों को तैयार करना:** एमडब्ल्यूसी के साझा विश्वास को आधार बना कर, हमारे कमीशन ने कोइनोनिया (सहभागिता) ऐनाबैपटिस्ट परम्परा, पहचान, और सार्वभौमिकता जैसे विषयों और अन्य प्रमुख विषयों पर शिक्षा संसाधनों की एक श्रृंखला विकसित किया है।
3. **सदस्य कलीसियाओं के मध्य ऐनाबैपटिस्ट–मेनोनाइट पहचान को बढ़ावा देना:** हमारे कमीशन ने मेनोनाइट विद्वानों, इतिहासकारों, और शान्ति स्थापना के लिए कार्य करने वाले विशेषज्ञों की सूची तैयार की है जो संसार भर में कहीं भी जा कर अल्पकालीन अवधि के लिए मेनोनाइट/ऐनाबैपटिस्ट शिक्षा की सेवकाई देने के लिए उपलब्ध रहते हैं; कुछ समय पहले ही हमने जॉन ड्राइवर द्वारा लिखित पुस्तक *लाइफ टूगेदर इन द स्पिरिट* का प्रकाशन करने में और उसे एमडब्ल्यूसी शेल्फ लिस्ट श्रृंखला में शामिल करने में योगदान दिया।
4. **उभरते हुए नेटवर्कों का सहयोग करना.** ग्लोबल ऐनाबैपटिस्ट मेनोनाइट इनसाइक्लोपेडिया ऑनलाइन (गेमियो) के साथ एक औपचारिक सम्बन्ध के अतिरिक्त, कमीशन ऐनाबैपटिस्ट मेनोनाइट इतिहासकारों, बाइबल शिक्षकों, और महिला धर्मज्ञानियों के बीच विश्वव्यापी नेटवर्क तैयार करने को बढ़ावा देता है।

तीन वर्षीय लक्ष्यों की झलकियाँ.

अ. मेनोनाइट – लूथरन – रोमन कैथोलिक त्रिपक्षीय वार्तालाप 2012–2017 को बढ़ावा देना (''बपतिस्मा और मसीह की देह कलीसिया में सम्मिलित करना''); भविष्य में होने वाले अपने दोनों वैश्विक सहभागिताओं के स्मरणार्थ आयोजनों की तैयारी में रिर्फार्म्ड कलीसियाओं की विश्व सहभागिता के साथ अन्तर्कलीसियाई सम्बन्धों पर चर्चा करना।

ब. निम्नलिखित मुद्दों पर चल रही चर्चाओं में कार्यकारिणी समिति का सहयोग करना: 1. एमडब्ल्यूसी के नाम परिवर्तन की सम्भावना पर; 2. ''विवादास्पद मुद्दों पर प्रत्युत्तर देने की नीति'' के दस्तावेज पर।

स. ''रिन्यूवल 2027'' के आयोजनों और गतिविधियों के माध्यम से सदस्य कलीसियाओं के मध्य ऐनाबैपटिस्ट पहचान की एक गहरी समझ को बढ़ावा देना।

फेथ एण्ड लाइफ कमीशन के सदस्य

थॉमस आर योडर न्यूफेल्ड, अध्यक्ष (कनाडा), जॉन डी. रोथ, सेक्रेटरी (यूएसए), तेवुड्रोस बेयने (यूथोपिया), एन्टोनियो गोन्साल्वेज (स्पेन), नजूजी मुकावा (डीआर कॉंगो), मंजुला राऊल (भारत), रबेका गोन्साल्वेज (मैक्सिको) लीडिया एडी सिद्धार्ता (इण्डोनेशिया)

MWC Publications Request

I would like to receive:

MWC Info
A monthly email newsletter with links to articles on the MWC website.

- ☐ English
- ☐ Spanish
- ☐ French

Courier
Magazine published twice a year (April and October)

- ☐ English
- ☐ Spanish
- ☐ French

- ☐ Electronic Version (pdf)
- ☐ Print Version

☐ Mailing delays? Consider the benefits of electronic subscription. Check this box to receive your *Courier/Correo/Courrier* subscription via email only.

Name

Address

Email

Phone

Complete this form and send to:

Mennonite World Conference
50 Kent Avenue, Suite 206
Kitchener, Ontario N2G 3R1 Canada

PHOTO: Life TV Indonesia

आशा के संदेशवाहक

जर्ग ब्रेकर मैसेंजर फाउंटेन के पास

फोटो: जे. नेलसन क्रेबिल

मेनोनाइट पास्टर जर्ग ब्रेकर अपने गृहनगर सिटी ऑफ बर्न, स्विट्ज़रलैण्ड में स्थित मैसेन्जर फॉउंटेन के पास रूके। उन्होंने बहते हुए फुहारे में हाथ धोया, और कहा, ''यह जल लोहू के रंग का हो गया था 1571 में जिस दिन हेंस हास्लिबॉकर का सिर काट दिया गया था।''

आज भी, आमिश लोग बर्न में मारे गए अन्तिम ऐनाबैपटिस्ट हास्लिबॉकर पर लिखा गया ऑसबण्ड (भजन) गाते हैं।

हास्लिबॉकर ने पहले ही कह दिया था कि उसका कटा सिर हँसेगा जब यह वध करने वाले की तलवार के वार से नीचे गिरेगा: ''सूर्य, मेरे लोहू के समान, लाल हो जाएगा, . . . उसी तरह से, शहर के कुँओं से लोहू बहेगा।''

तीनों बातें पूरी हुईं।

मैं नहीं जानता कि मैं इस कहानी के हर एक विवरण पर विश्वास करता हूँ या नहीं, परन्तु इसमें निहित संदेश सत्य है: जब युद्ध होता है या भ्रष्ट सरकार सत्ता में आती है, तो आशा के संदेशवाहक कभी कभी मर जाते हैं। सत्य की ज्योति धुंधली हो जाता है, और जिस जल को जीवन देना चाहिए वह लोहू से लाल हो जाता है।

16वीं शताब्दी के अपने पूर्वजों की साहसपूर्ण गवाही के लिए मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ। हमें उनका आदर करना चाहिए, परन्तु उसके बाद यीशु के नाम से दूसरों के लिए एक जीवित बलिदान बनने के द्वारा अपना जीवन न्यौछावर करने के प्रतिदिन के कार्य में लग जाना चाहिए।

आज के ऐनाबैपटिस्ट अन्य मसीहियों के साथ मिलकर शान्ति स्थापना को एक माध्यम बना सकते हैं कि इसके द्वारा वे दूसरों को यीशु को जानने और उसके पीछे चलने के लिए आमंत्रित करें।

जब मैं स्विट्ज़रलैण्ड में था, तब मैंने वर्ल्ड कॉंसिल ऑफ चर्चेस (डब्ल्यूसीसी) की सभाओं में मेनोनाइट वर्ल्ड कॉंफ्रेंस का प्रतिनिधित्व किया। उस वैश्विक देह में, जिसमें 5000 लाख मसीहियों के प्रतिनिधि शामिल हैं, मेनोनाइट के फेर्नांडो एन्नस डब्ल्यूसीसी पिलग्रिमेज ऑफ जस्टिस एण्ड पीस में एक अगुवे के रूप में आशा के सन्देशवाहक बने।

''हिंसा पर विजय प्राप्त करने के दशक के अन्त में (2001–2011) जिसकी पहल डब्ल्यूसीसी में शान्ति के लिए प्रतिबद्ध कलीसियाओं के द्वारा की गई थी, हमने डब्ल्यूसीसी में न्यायसम्मत शान्ति की समझ पर एक सर्वसम्मति कायम की है'' एन्नस ने यह बात कही। ''न्याय और शान्ति की यह यात्रा इस सहमति को आधार बनाती है, और इसमें न्याय के साथ शान्ति के कार्य में कलीसिया की संलिप्तता के आत्मिक पहलू को जोड़ती है।'' जब कि हम एकता के लिए प्रतिबद्ध अन्तर्कलीसियाई परिवार के साथ एक साथ मिलकर आगे बढ़ते हैं, हम यह जान पाते हैं कि यह कितना महत्वपूर्ण है कि न्यायसम्मत शान्ति हमारे विश्वास के अंगीकार, हमारी प्रार्थनाओं, और हमारे आत्मिक जीवनों में अपनी जड़े जमाए रहे। यह राजनैतिक रणनीति से बढ़कर है।

''यात्रा का यह रूपक हमें यह शिक्षा देता है कि जब तक न्यायसम्मत शान्ति हमारी शिष्यता की पहचान नहीं जाती है – व्यक्तिगत रूप से, स्थानीय समुदायों के रूप में, और एक वैश्विक मसीही परिवार के रूप में – हमारी गवाही पर शायद ही विश्वास किया जाएगा।''

यह परियोजना अनेक डिनोमिनेशनों के मसीहियों की सहायता करती है कि वे संसार में एक ''उचित शान्ति'' की स्थापना की ओर बढ़ने के लिए यीशु का अनुसरण करें।

जे. नेलसन क्रेबिल, एमडब्ल्यूसी अध्यक्ष (2015–2021), यूएसए के इण्डियाना में निवास करते हैं।